विशद

श्री सरस्वती मण्डल विधान

माण्डला

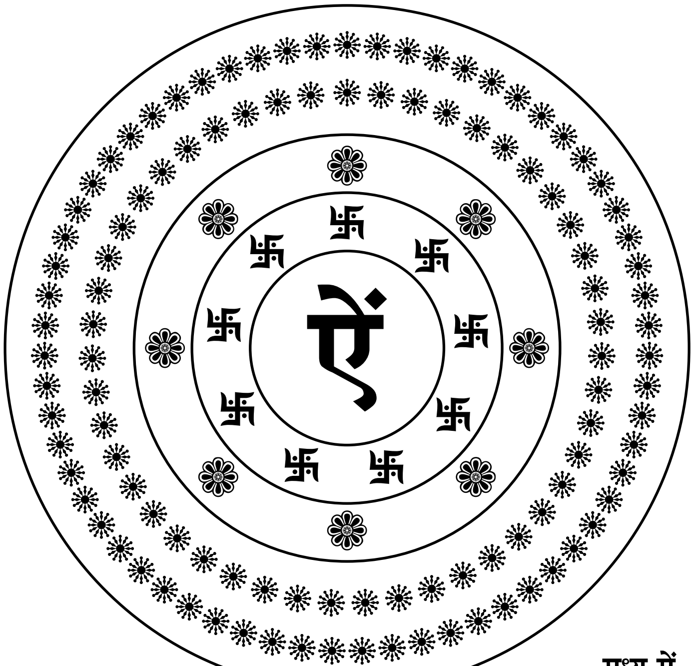

मध्य में – ऐं
प्रथम वलय में – 9 अर्घ्य
द्वितीय वलय में – 8 अर्घ्य
तृतीय वलय में – 108 अर्घ्य
कुल 125 अर्घ्य

रचयिता :

प. पू. साहित्य रत्नाकर आचार्य
श्री 108 विशदसागर जी महाराज

कृति : **विशद सरस्वती मंडल विधान**

कृतिकार : प. पू. साहित्य रत्नाकर, क्षमामूर्ति
आचार्य श्री 108 विशदसागरजी महाराज

संस्करण : प्रथम-2018 ' प्रतियाँ : 1000

संकलन : मुनि श्री विशालसागरजी महाराज,
आर्यिका श्री भक्तिभारती माताजी

सहयोगी : ऐलक विदक्षसागर जी, क्षु. श्री विसोमसागरजी,
क्षु. श्री वात्सल्यभारती माताजी

संपादन : ब्र. ज्योति दीदी , ब्र. आस्था दीदी ब्र. सपना दीदी
ब्र. आरती दीदी

प्राप्ति स्थल : 1. जैन सरोवर समिति, निर्मलकुमार गोधा,
2142, निर्मल निकुंज, रेडियो मार्केट
मनिहारों का रास्ता, जयपुर मो. : 9414812008

2. श्री राजेशकुमार जैन ठेकेदार
ए-107, बुध विहार, अलवर, मो. : 9414016566

3. विशद साहित्य केन्द्र
श्री दिगम्बर जैन मंदिर कुआँ वाला जैनपुरी रेवाड़ी
(हरियाणा), 9812502062, 09416888879

4. विशद साहित्य केन्द्र, हरीश जैन जय अरिहन्त ट्रेडर्स,
6561 नेहरू गली नियर लाल बत्ती चौक, गांधी नगर,
दिल्ली मो. 09818115971,

5. सुरेश सेठी, 958 शांतिनगर रोड़ नं. 3 दुर्गापुरी जयपुर
(राज.) 9413336017

मूल्य : 31/- रु. मात्र

श्री रविन्द्र जैन, जितेन्द्र जैन, मनोज जैन, राजीव जैन, अभिषेक जैन
वर्धमान ज्वैलर्स-नजफगढ़, दिल्ली
एम.एम.डाइमन्ड्स- करोल बाग दिल्ली, फोन- 9810900772

श्री देवेन्द्र जैन, श्रीमती सुदेश जैन, नजफगढ़-दिल्ली

।।आज का पुरुषार्थ ही कल का भाग्य।।

चन्द्रार्क कोटिघटितोज्ज्वलदिव्यमूर्ते,
श्री चन्द्रिका कलित निर्मल शुभ्रवस्त्रे।
कामार्थदायि कलहंस समाधि रूढ़े।
वागीश्वरि प्रतिदिन मम रक्ष देवि।।

सरस्वती स्तोत्र में सरस्वती देवी के लक्षण का वर्णन करते हुए कहा है—करोड़ों सूर्य और चन्द्रमा के एकत्रित तेज से भी अधिक तेज धाारण करने वाली, चन्द्र किरण के समान अत्यन्त स्वच्छ एवं श्वेत वस्त्र को धारण करने वाली तथा कलहंस पक्षी पर आरूढ़ दिव्यमूर्ति श्री सरस्वती देवी हमारी प्रतिदिन रक्षा करे।

सरस्वती मया दृष्टा, दिव्या कमललोचना।
हंसस्कंध समारूढ़ा, वीणा पुस्तकधारिणी।।

सरस्वती देवी दिव्य कमल के समान नेत्रों वाली हंस वाहन पर आरूढ़ वीणा और पुस्तक को हाथ में धारण करने वाली है सरस्वती देवी के सोलह अन्य नाम इस प्रकार है। (1) भारती (2) सरस्वती (3) शारदा (4) हंसगामिनी (5) विद्वानों की माता (6) वागीश्वरी (7) कुमारी (8) ब्रह्मचारिणी (9) जगन्माता (10) ब्राह्मिणी (11) ब्रह्माणी (12) वरदा (13) वाणी (14) भाषा (15) श्रुतदेवी (16) गौरी दिगम्बर जैनाचार्य श्री ब्रह्मसूरि जी द्वारा सरस्वती माता की 108 नामो से स्तुति की गई है। उन्हीं 108 नामो को आधार लेकर परम पूज्य साहित्य रत्नाकर आचार्य श्री 108 विशद सागर जी महाराज ने इस सरस्वती महामण्डल विधान की रचना की है। नवग्रह चौबीस तीर्थंकर पूजा व शब्द ब्रह्मपूजा के अर्घ भी इसमें समाहित किए हैं। विद्यालय-महाविद्यालय में अध्ययनरत सरस्वती की आराधना करने वालो के लिए यह पूजन-विधान विशेष लाभकारी है। सरस्वती पुत्रो के लिए यह सरस्वती महामण्डल विधान किसी वरदान से कम नहीं है। मंदबुद्धि जीवों को विद्या प्राप्ति हेतु यह विधान पूरी श्रद्धा-भावना से करना चाहिए। यह विधान, सरस्वती स्तोत्र पाठ, चालीसा, आरती, जाप्य आदि समय-समय पर करते रहना चाहिए इस पुस्तक को आप अपने पास सम्भाल कर रखें गुरुवर परम पूज्य क्षमामूर्ति आचार्य श्री 108 विशद सागर जी महाराज के श्री चरणों में त्रिभक्ति पूर्वक नमोस्तु करते हुए यही भावना लाते हैं कि आगे भी इसी तरह अपनी लेखनी को और भी विशाल रूप देते हुए जिनवाणी के प्रचार-प्रसार में संलग्न रहे कालान्तर में आपको केवल ज्ञान लक्ष्मी की प्राप्ति हो पुन: श्री चरणों में नमोस्तु-नमोस्तु-नमोस्तु।

मुनि विशाल सागर
संघस्थ-आचार्य श्री विशद सागर जी
वर्षायोग 2012 शास्त्री नगर-दिल्ली

गोबर गणेश

अध्ययनशालाओं में एक जड़मति छात्र की क्या अवस्था होती है, उसे वह भुक्तभोगी विद्यार्थी ही अनुभव कर सकता है; जो बात-बात में अध्यापक की प्रताड़ना, साथियों और सहपाठियों द्वारा उपहास एवं आत्म-ग्लानि उसके रसमय जीवन को निराशा से भर देते है! निराशा ही क्यों? कभी-कभी तो आत्म-हत्या जैसा लोकनिंद्य जघन्य कार्य भी कर बैठता है वह, या अशरण-सा घूमता हुआ विविध मंत्र-तन्त्रों का अनुष्ठान करके कुशाग्र बुद्धि बनने के स्वप्न देखा करता है। ऐसे ही एक अन्तेवासी की यह लघु कथा है जिसने कि महाप्रभावक भक्तामर जी के छटवें काव्य का ऋद्धि-मंत्र सहित अनुष्ठान किया और ज्ञानावरणी कर्म के क्षयोपशम से व्युत्पन्नमति बनकर अपने जीवन को मधुर बनाया।

तत्कालीन भारत की राजधानी काशी; राजा हेमवाहन; उसके दो पुत्र—ज्येष्ठ भूपाल, लघु भुजपाल। पहिला अतिमन्द बुद्धि—दूसरा कुशाग्रबुद्धि या आध्यात्मिक भाषा में उन्हें कह सकते हैं—जड़-चेतन या निश्चय और व्यवहार।

बारह वर्ष कूकर की पूँछ नली में रखी गई, जब निकली तब टेढ़ी की टेढ़ी। बारह वर्ष तक पंडित श्रुतधर ने भूपाल के साथमाथापच्ची की और जब देखा कि उसके मस्तिष्क में सिवाय गोबर के और कुछ नहीं भरा है, तब उनके पांडित्य ने जवाब दे दिया!...और दूसरी ओर बारह वर्ष में राजकुमार भुजपाल ने क्या प्राप्त किया, वह भी सुन लीजिये। पिंगल, व्याकरण, तर्क, न्याय राजनीति, सामुद्रिक, वैद्यक, शास्त्र, विज्ञान, मनोविज्ञान आदि आदि।

एक ही गुरु के पढ़ाये ये दो शिष्य, एक ही पिता के ये दो पुत्र परन्तु अन्तर, जमीन और आसमान का। यह दैव दुर्विपाक नहीं तो और क्या है? परिणामस्वरूप एक का जीवन लोकप्रियता के पथ पर और दूसरे का लोक-निन्दा के मार्ग पर ढलने लगा!...

निदान, परिस्थितियों से पराजित होकर भूपाल ने अपने लघुभ्राता भुजपाल की सम्मति के अनुसार भक्तामर काव्य छः के मंत्र का अनुष्ठान किया और इक्कीस दिन के पश्चात् भूपाल का साक्षात्कार जिन शासन की अधिष्ठात्री 'ब्राह्मी' नाम की देवी से हुआ। उससे वर प्राप्त कर वह एक ऐसा धुरन्धर विद्वान हुआ कि पुरानों में उस घटना ने अपना एक विशिष्ट स्थान बना लिया है।

इसी प्रकार के सैकड़ों उदाहरण श्रुत की आराधना, मंत्र जाप्य, पूजा विधान के शास्त्रों में भरे पड़े हैं। सच्चे मन से की गई जिनवाणी की पूजा आराधना आपके भविष्य को उज्ज्वल बनाए।

—ब्र. प्रदीप भैय्या जी

लघु विनय पाठ

पूजा विधि से पूर्व यह, पढ़ें विनय से पाठ।
धन्य जिनेश्वर देवजी, कर्म नशाए आठ॥1॥
शिव वनिता के ईश तुम, पाए केवल ज्ञान।
अनन्त चतुष्टय धारते, देते शिव सोपान॥2॥
पीड़ा हारी लोक में, भव दधि नाशनहार।
ज्ञायक हो त्रयलोक के, शिवपद के दातार॥3॥
धर्मामृत दायक प्रभो!, तुम हो एक जिनेन्द्र।
चरण कमल में आपके, झुकते विनत शतेन्द्र॥4॥
भवि जन को भव-सिन्धु में, एक आप आधार।
कर्म बन्ध का जीव के, करने वाले क्षार॥5॥
चरण कमल तव पूजते, विघ्न रोग हो नाश।
भवि जीवों को मोक्ष पथ, करते आप प्रकाश॥6॥
यह जग स्वारथ से भरा, सदा बढ़ाए राग।
दर्श ज्ञान दे आपका, जग को विशद विराग॥7॥
एक शरण तुम लोक में, करते भव से पार।
अतः भक्त बन के प्रभो!, आया तुमरे द्वार॥8॥

मंगल पाठ

मंगल अर्हत् सिद्ध जिन, आचार्योपाध्याय संत।
धर्मागम की अर्चना, से हो भव का अंत॥9॥
मंगल जिनगृह बिम्ब जिन, भक्ती के आधार।
जिनकी अर्चा कर मिले, मोक्ष महल का द्वार॥10॥

॥इत्याशीर्वादः पुष्पांजलिं क्षिपेत॥

अथ पूजा पीठिका

ॐ जय जय जय। नमोस्तु, नमोस्तु, नमोस्तु।
णमो अरिहंताणं, णमो सिद्धाणं, णमो आयरियाणं,
णमो उवज्झायाणं, णमो लोए सव्वसाहूणं।

ॐ ह्रीं अनादिमूल मंत्रेभ्योनमः। (पुष्पांजलिं क्षिपामि)

चत्तारि मंगलं, अरिहन्ता मंगलं, सिद्धा मंगलं, साहू मंगलं, केवलिपण्णत्तो, धम्मो मंगलं। चत्तारि लोगुत्तमा, अरिहन्ता लोगुत्तमा, सिद्धा लोगत्तमा, साहू लोगुत्तमा, केवलिपण्णत्तो, धम्मो लोगुत्तमो। चत्तारि शरणं पव्वज्जामि, अरिहंते शरणं पव्वज्जामि, सिद्धे शरणं पव्वज्जामि, साहू शरणं पव्वज्जामि, केवलिपण्णत्तं, धम्मं शरणं पव्वज्जामि।

ॐ नमोऽर्हते स्वाहा। (पुष्पांजलिं क्षिपामि)

मंगल विधान

शुद्धाशुद्ध अवस्था में कोई, णमोकार को ध्याये।
पूर्ण अमंगल नशे जीव का, मंगलमय हो जाए।
सब पापों का नाशी है जो, मंगल प्रथम कहाए।
विघ्न प्रलय विषनिर्विष शाकिनि, बाधा ना रह पाए।

।। पुष्पांजलिं क्षिपेत।।

अर्घ्यावली

जल गंधाक्षत पुष्पचरू, दीप धूप फल साथ।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य ले, पूज रहे जिन नाथ!।।

ॐ ह्रीं श्री भगवतो गर्भ-जन्म-तप-ज्ञान निर्वाण पंच कल्याणकेभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।।1।।

ॐ ह्रीं श्री अर्हत् सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधूभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।।2।।

ॐ ह्रीं श्री भगवज्जिन अष्टाधिक सहस्त्रनामेभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।।3।।

ॐ ह्रीं श्रीं द्वादशांगवाणी प्रथमानुयोग, करणानुयोग, चरणानुयोग, द्रव्यानुयोग नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।।4।।

ॐ ह्रीं ढाईद्वीप स्थित त्रिऊन नव कोटि मुनि चरणकमलेभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।।5।।

"पूजा प्रतिज्ञा पाठ"

अनेकांत स्याद्वाद के धारी, अनन्त चतुष्टय विद्यावान।
मूल संघ में श्रद्धालू जन, का करने वाले कल्याण।
तीन लोक के ज्ञाता दृष्टा, जग मंगलकारी भगवान।
भाव शुद्धि पाने हे स्वामी!, करता हूँ मैं भी गुणगान।।1।।

निज स्वभाव विभाव प्रकाशक, श्री जिनेन्द्र हैं क्षेम निधान।
तीन लोकवर्ती द्रव्यों के, विस्तृत ज्ञानी हे भगवान!
हे अर्हन्त! अष्ट द्रव्यों का, पाया मैंने आलम्बन।
होकर के एकाग्रचित्त मैं, पुण्यादिक का करूँ हवन।।2।।

ॐ ह्रीं विधियज्ञ प्रतिज्ञायै जिनप्रतिमाग्रे पुष्पांजलिं क्षिपामि।

"स्वस्ति मंगल पाठ"

ऋषभ अजित सम्भव अभिनन्दन, सुमति पदम सुपार्श्वजिनेश।
चन्द्र पुष्प शीतल श्रेयांस जिन, वासुपूज्य पूजूँ तीर्थेश।।
विमलानन्त धर्म शांती जिन, कुन्थु अरहमल्ली दें श्रेय।
मुनिसुव्रत नमि नेमि पार्श्व प्रभु, वीर के पद में स्वस्ति करेय।।

इति श्री चतुर्विंशति तीर्थंकर स्वस्ति मंगल विधानं पुष्पांजलिं क्षिपामि।

"परमर्षि स्वस्ति मंगल पाठ"

ऋषिवर ज्ञान ध्यान तप करके, हो जाते हैं ऋद्धीवान।
मूलभेद हैं आठ ऋद्धि के, चौंसठ उत्तर भेद महान।।
बुद्धि ऋद्धि के भेद अठारह, जिनको पाके ऋद्धीवान।
निस्पृह होकर करें साधना, 'विशद' करें स्व पर कल्याण।।1।।
ऋद्धि विक्रिया ग्यारह भेदों, वाले साधू ऋद्धीवान।
नौं भेदों युत चारण ऋद्धी, धारी साधू रहे माहान।।
तप ऋद्धी के भेद सात हैं, तप करते साधू गुणवान।
मन बल वचन काय बल ऋद्धी, धारी साधू रहे प्रधान।।2।।
भेद आठ औषधि ऋद्धि के, जिनके धारी सर्व ऋशीष।
रस ऋद्धी के भेद कहे छह, रसास्वाद शुभ पाए मुनीश।।
ऋद्धि अक्षीण महानस एवं, ऋद्धि महालय धर ऋषिराज।
जिनकी अर्चा कर हो जाते, सफल सभी के सारे काज।।3।।

।। इति परमर्षि-स्वस्ति-मंगल-विधानं।।

(पुष्पाञ्जलिं क्षिपामि)

मंगल पाठ

परमेष्ठी त्रय लोक में, मंगलमयी महान।
हरें अमंगल विश्व का, क्षण भर में भगवान।।1।।

मंगलमय अरहंतजी, मंगलमय जिन सिद्ध।
मंगलमय मंगल परम, तीनों लोक प्रसिद्ध।।2।।
मंगलमय आचार्य हैं, मंगल गुरु उवझाय।
सर्व साधु मंगल परम, पूजें योग लगाय।।3।।
मंगल जैनागम रहा, मंगलमय जिन धर्म।
मंगलमय जिन चैत्य शुभ, हरें जीव के कर्म।।4।।
मंगल चैत्यालय परम, पूज्य रहे नवदेव।
श्रेष्ठ अनादिनन्त शुभ, पद यह रहे सदैव।।5।।
इनकी अर्चा वन्दना, जग में मंगलकार।
समृद्धी सौभाग्य मय, भव दधि तारण हार।।6।।
मंगलमय जिन तीर्थ हैं, सिद्ध क्षेत्र निर्वाण।
रत्नत्रय मंगल कहा, वीतराग विज्ञान।।7।।

अथ् अर्हत पूजा प्रतिज्ञायां...।।पुष्पांजलिं क्षिपामि।।

(यहाँ पर नौ बार णमोकार मंत्र जपना एवं पूजन की प्रतिज्ञा करनी चाहिए।)

(जो शरीर पर वस्त्र एवं आभूषण हैं इसके अलावा परिग्रह एवं मंदिर से बाहर जाने का पूजन पर्यन्त त्याग)

इत्याशीर्वाद

मूलनायक सहित महासमुच्चय पूजा

स्थापना

अर्हत्सिद्धाचार्य उपाध्याय, सर्व साधु जिन धर्म प्रधान।
जैनागम जिन चैत्य जिनालय, रत्नत्रय दश धर्म महान॥
सोलह कारण णमोकार शुभ, अकृत्रिम जिन चैत्यालय।
सहस्रनाम नन्दीश्वर मेरू, अतिशय क्षेत्र हैं मंगलमय॥
ऊर्जयन्त कैलाश शिखर जी, चम्पा, पावापुर, निर्वाण।
विहरमान, तीर्थंकर चौबिस, गणधर मुनि का है आह्वान॥

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक...सहित पंचकल्याणक पदालंकृत सर्व जिनेश्वर श्री अरहंत-सिद्ध-आचार्य- उपाध्याय-सर्वसाधु-जिनधर्म जिनागम- जिनचैत्य-जिन चैत्यालय-रत्नत्रय धर्म-दशधर्म-सोलहकारण-त्रिलोक स्थित कृत्रिम-अकृत्रिम चैत्य-चैत्यालय सहस्रनाम-पंचमेरू-नन्दीश्वर सम्बन्धी चैत्य चैत्यालय- कैलाश गिरि-सम्मेद शिखर-गिरनार-चम्पापुरी- पावापुर आदि निर्वाण क्षेत्र अतिशय क्षेत्र, चतुर्विंशति तीर्थंकर-विद्यमान बीस तीर्थंकर गणधरादि मुनिवरा: अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वाननं। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठ: ठ: स्थापनं। अत्र मम सन्निहितौ भव भव वषट् सन्निधिकरणं।

(ज्ञानोदय छन्द)

तीनों रोग महादुखदायी, उनसे हम घबड़ाए हैं।
निर्मलता पाने हे जिनवर! प्रासुक जल यह लाए हैं॥
णमोकार नन्दीश्वर मेरू, सोलह कारण जिन तीर्थेश।
सहस्रनाम दशधर्म देव नव, रत्नत्रय है पूज्य विशेष॥
देव शास्त्र गुरु धर्म तीर्थ जिन, विद्यमान तीर्थंकर बीस।
कृत्रिमाकृत्रिम चैत्य जिनालय, को हम झुका रहे हैं शीश॥1॥

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक...सहित पंचकल्याणक पदालंकृत सर्व जिनेश्वर, नवदेवता, देव-शास्त्र-गुरु, सोलहकारण- रत्नत्रय-दशधर्म, पंच मेरू-नन्दीश्वर त्रिलोक सम्बन्धी समस्त कृत्रिम-अकृत्रिम चैत्य-चैत्यालय, सिद्ध क्षेत्र अतिशय क्षेत्र तीस चौबीसी, विद्यमान बीस तीर्थंकर तीन कम नौ करोड़ गणधरादि मुनिवरा: जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

क्रोध की ज्वाला में हे स्वामी!, सदा झुलसते आए हैं।
शीतलता पाने तुम चरणों, चन्दन घिसकर लाए हैं॥

णमोकार नन्दीश्वर मेरू, सोलह कारण जिन तीर्थेश।
सहस्रनाम दशधर्म देव नव, रत्नत्रय है पूज्य विशेष।।
देव शास्त्र गुरु धर्म तीर्थ जिन, विद्यमान तीर्थंकर बीस।
कृत्रिमाकृत्रिम चैत्य जिनालय, को हम झुका रहे हैं शीश।।2।।

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक...सहित सर्व जिनेश्वर, नवदेवता, देव-शास्त्र-गुरु, सिद्धक्षेत्र, विद्यमान विंशति जिन, वीतराग विज्ञानेभ्यो: संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

अक्षय पद का ज्ञान जगाने, तव चरणों मे आये हैं।
अक्षय पदवी पाने हे जिन!, अक्षत चरणों लाए हैं।।
णमोकार नन्दीश्वर मेरू, सोलह कारण जिन तीर्थेश।
सहस्रनाम दशधर्म देव नव, रत्नत्रय है पूज्य विशेष।।
देव शास्त्र गुरू धर्म तीर्थ जिन, विद्यमान तीर्थंकर बीस।
कृत्रिमाकृत्रिम चैत्य जिनालय, को हम झुका रहे हैं शीश।।3।।

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक...सहित सर्व जिनेश्वर, नवदेवता, देव-शास्त्र-गुरु, सिद्धक्षेत्र, विद्यमान विंशति जिन, वीतराग विज्ञानेभ्यो: अक्षयपदप्राप्ताये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

काम रोग से पीड़ित होकर, निज को ना लख पाए हैं।
शीलेश्वर बनने को चरणों, पुष्प संजोकर लाए हैं।।
णमोकार नन्दीश्वर मेरू, सोलह कारण जिन तीर्थेश।
सहस्रनाम दशधर्म देव नव, रत्नत्रय है पूज्य विशेष।।
देव शास्त्र गुरु धर्म तीर्थ जिन, विद्यमान तीर्थंकर बीस।
कृत्रिमाकृत्रिम चैत्य जिनालय, को हम झुका रहे हैं शीश।।4।।

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक...सहित सर्व जिनेश्वर, नवदेवता, देव-शास्त्र-गुरु, सिद्धक्षेत्र, विद्यमान विंशति जिन, वीतराग विज्ञानेभ्यो: कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

मग्न हुए प्रभु आतम रस में, क्षुधा रोग बिनसाए हैं।
निजगुण पाने को हे जिन!, नैवेद्य चढ़ाने लाए हैं।।
णमोकार नन्दीश्वर मेरू, सोलह कारण जिन तीर्थेश।
सहस्रनाम दशधर्म देव नव, रत्नत्रय है पूज्य विशेष।।
देव शास्त्र गुरू धर्म तीर्थ जिन, विद्यमान तीर्थंकर बीस।
कृत्रिमाकृत्रिम चैत्य जिनालय, को हम झुका रहे हैं शीश।।5।।

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक...सहित सर्व जिनेश्वर, नवदेवता, देव-शास्त्र-गुरु,

सिद्धक्षेत्र, विद्यमान विंशति जिन, वीतराग विज्ञानेभ्यो: क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भटक रहे अज्ञान तिमिर में, चित् प्रकाश ना पाए हैं।
दीप जलाकर के यह घृत का, मोह नशाने आए हैं।
णमोकार नन्दीश्वर मेरू, सोलह कारण जिन तीर्थेश।
सहस्रनाम दशधर्म देव नव, रत्नत्रय है पूज्य विशेष।।
देव शास्त्र गुरु धर्म तीर्थ जिन, विद्यमान तीर्थंकर बीस।
कृत्रिमाकृत्रिम चैत्य जिनालय, को हम झुका रहे हैं शीश।।6।।

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक...सहित सर्व जिनेश्वर, नवदेवता, देव-शास्त्र-गुरु, सिद्धक्षेत्र, विद्यमान विंशति जिन, वीतराग विज्ञानेभ्यो: मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

ध्यान अग्नि में कर्म खपा, निज गंध जगाने आये हैं।
सुरभित धूप सुगन्धित अनुपम, यहाँ जलाने लाए हैं।।
णमोकार नन्दीश्वर मेरू, सोलह कारण जिन तीर्थेश।
सहस्रनाम दशधर्म देव नव, रत्नत्रय है पूज्य विशेष।।
देव शास्त्र गुरु धर्म तीर्थ जिन, विद्यमान तीर्थंकर बीस।
कृत्रिमाकृत्रिम चैत्य जिनालय, को हम झुका रहे हैं शीश।।7।।

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक...सहित सर्व जिनेश्वर, नवदेवता, देव-शास्त्र-गुरु, सिद्धक्षेत्र, विद्यमान विंशति जिन, वीतराग विज्ञानेभ्यो: अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

जिस फल को पाया है तुमने, उस पर हम ललचाए हैं।
परम मोक्ष फल पाने हे जिन!, फल चरणों में लाए हैं।।
णमोकार नन्दीश्वर मेरू, सोलह कारण जिन तीर्थेश।
सहस्रनाम दशधर्म देव नव, रत्नत्रय है पूज्य विशेष।।
देव शास्त्र गुरु धर्म तीर्थ जिन, विद्यमान तीर्थंकर बीस।
कृत्रिमाकृत्रिम चैत्य जिनालय, को हम झुका रहे हैं शीश।।8।।

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक...सहित सर्व जिनेश्वर, नवदेवता, देव-शास्त्र-गुरु, सिद्धक्षेत्र, विद्यमान विंशति जिन, वीतराग विज्ञानेभ्यो: मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

अष्टम वसुधा पाने को यह, अर्घ्यं बनाकर लाए हैं।
अष्टगुणों की सिद्धी पाने, तव चरणों में आए हैं।।
णमोकार नन्दीश्वर मेरू, सोलह कारण जिन तीर्थेश।

सहस्रनाम दशधर्म देव नव, रत्नत्रय है पूज्य विशेष।।
देव शास्त्र गुरु धर्म तीर्थ जिन, विद्यमान तीर्थंकर बीस।
कृत्रिमाकृत्रिम चैत्य जिनालय, को हम झुका रहे हैं शीश।।9।।

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक...सहित पंचकल्याणक पदालंकृत सर्व जिनेश्वर, नवदेवता, देव-शास्त्र-गुरु, सोलहकारण- रत्नत्रय-दशधर्म, पंच मेरू-नन्दीश्वर त्रिलोक सम्बन्धी समस्त कृत्रिम-अकृत्रिम चैत्य-चैत्यालय, सिद्ध क्षेत्र अतिशय क्षेत्र तीस चौबीसी, विद्यमान बीस तीर्थंकर तीन कम नौ करोड़ गणधरादि मुनिश्वरेभ्यो अनर्घ्य पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- **मोक्ष महापद पाएँगे, करके शांती धार।**
संयम धारण है विशद, इस जीवन का सार।।

।।शान्तये शान्तीधारा।।

दोहा- रत्नत्रय को धारकर, पाएँगे शिव पंथ।
होंगे कर्म विनाश सब, साधू बन निर्ग्रन्थ।।

।।इत्याशीर्वाद पुष्पांजलि क्षिपेत।।

जयमाला

दोहा- **पूजा के शुभ भाव से, कटे कर्म जंजाल।**
महा समुच्चय रूप से, गाते हम जयमाल।।

(शम्भू छन्द)

कर्म घातियाँ नाश किए जो, वह अर्हत् कहलाते हैं।
कर्म रहित हो ज्ञान शरीरी, सिद्ध महापद पाते हैं।।
पंचाचार का पालन करते, रत्नत्रयधारी आचार्य।
उपाध्याय से शिक्षापाते, धर्म भावनाधारी आर्य।।1।।
मोक्ष मार्ग पर बढ़ने हेतू, सर्व साधू नित करते यत्न।
सम्यक् दर्शन ज्ञान चरण हम, पूज रहे हैं तीनों रत्न।।
जिनवर कथित धर्म है पावन, श्रेष्ठ अहिंसामयी परम।
अंग बाह्य अरु अंग प्रविष्टी, रूप कहाँ है जैनागम।।2।।
कृत्रिमाकृत्रिम चैत्य लोक में, कहे गये हैं मंगलकार।
घंटा तोरण ध्वज कलशायुत, चैत्यालय सोहे मनहार।।
देव शास्त्र गुरु की पूजा से, होता जीवों का कल्याण।
भरतैरावत ढाई द्वीप में, तीस चौबीसी रही महान।।3।।

पाँच विदेहों में तीर्थंकर, विद्यमान कहलाए बीस।
जम्बू शाल्मलि तरू शाख के, जिन पद झुका रहे हम शीश॥
उत्तम क्षमा मार्दव आर्जव, शौच सत्य संयम तप जान।
त्यागाकिन्चन ब्रह्मचर्य दश, धर्म कहे शिव के सोपान॥4॥
दर्श विशुद्धी आदिक सोलह, कारण भावना है शुभकार।
काल अनादी कष्ट निवारक, महामंत्र गाया णवकार॥
सहस्रनाम हैं तीर्थंकर के, जिनका जीव करें गुणगान।
नन्दीश्वर है दीप आठवाँ, जिस पर जिनगृह हैं भगवान॥5॥
पंच मेरु में रहे चार वन, भद्रशाल नन्दन शुभकार।
तृतीय रहा सौमनस पाण्डुक, चौथा कहा है मंगलकार॥
चारों वन की चतुर्दिशा में, अकृत्रिम शाश्वत जिनधाम।
रहे कुलाचल गजदन्तों पर, जिनबिम्बों पद विशद प्रणाम॥6॥
हैं निर्वाण क्षेत्र मंगलमय, अतिशय क्षेत्र हैं अपरम्पार।
सहस्रकूट शुभ समवशरण है, मानस्तंभ भी मंगलकार॥
भूत भविष्यत वर्तमान के, तीर्थंकर गाये चौबीस।
पंच भरत ऐरावत में सब, तीर्थंकर हैं सात सौ बीस॥7॥
चौदह सौ बावन गणधर कई, वर्तमान के अन्य मुनीश।
श्रेष्ठ ऋद्धियाँ चौंसठ जानो, पावन गाए सप्त ऋषीश॥
भरत बाहुबली पाण्डव हनुमान, और पूजते लव कुश राम।
पञ्च बालयति सर्व ऋद्धियाँ, और पूजते हम शिव धाम॥8॥
गर्भ जन्म तप ज्ञान मोक्ष यह, पूज रहे पाँचों कल्याण।
जन्म भूमि है तीर्थ अयोध्या, जिसका रहे सदा श्रद्धान॥
हम प्रत्यक्ष परोक्ष यहाँ से, पूज रहे सब तीरथ धाम।
वचन काय मन तीन योग से, करते बारम्बार प्रणाम॥9॥

दोहा– **पूजन की है भाव से, किया अल्प गुणगान।**
जीवन शांती मय बने, पाएँ ''विशद'' कल्याण॥

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक...सहित पंचकल्याणक पदालंकृत सर्व जिनेश्वर श्री नवदेवता, देव-शास्त्र-गुरु, सोलहकारण- रत्नत्रय-दश धर्म, पंच मेरू-नन्दीश्वर, त्रिलोक एवं त्रिकाल सम्बन्धी समस्त कृत्रिम अकृत्रिम चैत्य चैत्यालय, सिद्धक्षेत्र-अतिशय क्षेत्र तीस चौबीसी विद्यमान बीस तीर्थंकर तीन कम नो करोड़ गणधरादि मुनीश्वेरभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा– **हो प्रभावना धर्म की, हो शासन जयवन्त।**
अन्तिम है यह भावना, पाएँ भव का अन्त।।

।।इत्याशीर्वादः पुष्पांजलिं क्षिपेत्।।

सरस्वती स्तोत्र

(शम्भू छन्द)

कोटी चन्द्र सूर्य से भी अति, उज्ज्वल दिव्य मूर्ति पावन।
धवल चांदनी से अति निर्मल, शुभ्र वस्त्र अति मनभावन।।
समतामय कामार्थ दायिनी, हंसारूढ़ दिव्य आसन।
रक्षा करो मात जिनवाणी, प्रतिदिन बारंबार नमन्।।1।।

नमित सुरासुर के मुकुटों की, मणिमय आभा कांतीमान।
सघन मंजरी से अनुरंजित, पाद पद्म हैं आभावान।।
नील अली सम केश सुसुंदर, प्रमद हस्ति सम गगन गमन।
रक्षा करो मात जिनवाणी, प्रतिदिन बारंबार नमन्।।2।।

मुक्तामणि से निर्मित कुण्डल, हार मुद्रिका अरु केयूर।
निर्मल रत्नावलि सुसज्जित, मुकुट सुशोभित है भरपूर।।
सर्व अंग भूषण से सज्जित, नर मुनीन्द्र भी करें नमन्।
रक्षा करो मात जिनवाणी, प्रतिदिन बारंबार नमन्।।3।।

कंकण कनक करधनी सुंदर, कंठ में शोभित कंठाहार।
नूपुर झंकृत होते अनुपम, इत्यादिक शोभित उपहार।
धर्म वारि निधि की संतति को, नित प्रति करते हैं वर्धन।
रक्षा करो मात जिनवाणी, प्रतिदिन बारंबार नमन्।।4।।

कदली दल को निंदित करते, मृदुतम जिनके दोनों हाथ।
विकसित कमल समान सुमुख है, कमलासन पर शोभित नाथ।।
सब भाषामय दिव्य देशना, जिन मुख से निःसृत पावन।
रक्षा करो मात जिनवाणी, प्रतिदिन बारंबार नमन्।।5।।

अर्ध चन्द्र सम जटा सुमंडित, कला निधी सुंदर तम रूप।
धारण किए गोद में पुस्तक, जिनका चित् चैतन्य स्वरूप।।
सर्व शास्त्र का करे प्रकाशन, अजपाजाप मय शुभ आसन।
रक्षा करो मात जिनवाणी, प्रतिदिन बारंबार नमन्।।6।।

सागर फेन समान सुसुंदर शंख लिए हैं बर्फ समान।
पूर्ण चन्द्रमा सम शोभित तन, अभ्रहार ज्यों शोभावान।।
दिव्य ललाट सहित चंचल अति, हिरणी शावक समलोचन।
रक्षा करो मात जिनवाणी, प्रतिदिन बारंबार नमन्।।7।।

काम रूपिणी हे! करणोन्नत, जगत् पूज्य तुम परम पवित्र।
नाग गरुड़ किन्नर के स्वामी, पूजा करते सुर नर नित्य।।
सर्व यक्ष विद्या धरेन्द्र नित 'विशद' करें तुमको वन्दन।
रक्षा करो मात जिनवाणी, प्रतिदिन बारंबार नमन्।।8।।

सरस्वती नाम स्तोत्र

सरस्वती की कृपा से मानव, करें काव्य की संरचना।
इसीलिए निश्चल भावों से, पूज्य सरस्वती को जपना।।
श्री सर्वज्ञ कथित जिनवाणी, बहु भाषामय जिनका ज्ञान।
हनन करे अज्ञान तिमिर का, विद्या का करती गुणगान।।1।।

दिव्य कमल लोचन से देवी, सरस्वती देखो हमको।
हंसारूढ़ सुपुस्तक वीणा, धारी वंदन है तुमको।।
प्रथम भारती नाम आपका, द्वितीय सरस्वती है नाम।
तीजा नाम शारदा देवी, हंसगामिनी चौथानाम।।2।।

विदुषां माता नाम पाँचवां, वागीश्वरी है छठवां नाम।
सप्तम नाम कुमारी पावन, ब्रह्मचारिणी अष्टम नाम।।
नौवाँ नाम जगत् माता है, ब्राह्मिणी जिनका दशवां नाम।
ग्यारहवां जानो ब्रह्माणी, वरदा है बारहवां नाम।।3।।

वाणी नाम कहा तेरहवां, चौदहवां है भाषा नाम।
श्रुतदेवी है नाम पंचदश, सोलहवां है गौरी नाम।।
प्रातः उठकर श्रुतदेवी के, इन सब नामों को पढ़ते।
कर देती संतुष्ट सुमाता, विद्या में आगे बढ़ते।।4।।

इच्छित वर देने वाली, हे सरस्वती! है तुम्हें नमन्।
सिद्धि दो हमको हे माता! काम रूपिणी तुम्हें नमन्।।

विद्या का आरंभ करूँ मैं, हे! ब्रह्माणी तुम्हें नमन्।
'विशद' ज्ञान को देने वाली, श्री जिनवाणी तुम्हें नमन्।।5।।

(पुष्पांजलि क्षिपेत)

दोहा– **शब्द ब्रह्म इस लोक में, मंगलमयी महान।**
पुष्पाञ्जलि कर पूजते, पाने पद निर्वाण।।

(प्रथम वलयोपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्)

सर्वग्रह अरिष्ट निवारक श्री चौबीसी पूजा

(स्थापना)

कर्मों ने काल अनादी से, हमको जग में भरमाया है।
मिलकर कर्मों के साथ सभी, नवग्रहों ने हमें सताया है।।
अब सूर्य चंद्र बुध भौम-गुरू, अरु शुक्र शनी राहू केतू।
आह्वाहन करते जिनवर का, हम नवग्रह की शांती हेतू।।
तुमने कर्मों का अन्त किया, फिर अर्हत् पद को पाया है।
प्रभु उभयलोक की शांति हेतु, मेरा भी मन ललचाया है।।

ॐ ह्रीं सर्वग्रहारिष्ट निवारक श्री चतुर्विंशति तीर्थंकर जिना:! अत्र अवतरत-अवतरत संवौषट् आह्वाननं। अत्र तिष्ठत-तिष्ठत ठः ठः स्थापनं। अत्र मम् सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणं।

(गीता छन्द)

हम जन्म मृत्यु अरु जरा के, रोग से दुख पाये हैं।
उत्तम क्षमादिक धर्म पाने, नीर निर्मल लाये हैं।।
नवकोटि से वृषभादि जिन की, कर रहे शुभ अर्चना।
ग्रह शांति से परमार्थ सिद्धी, हेतु पद में वंदना।।1।।

ॐ ह्रीं सर्वग्रहारिष्ट निवारक श्री चतुर्विंशति तीर्थंकर जिनेन्द्रेभ्यो: जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

संसार के संताप से, मन में बहुत अकुलाए हैं।
अब भव भ्रमण से पार पाने, चरण चंदन लाए हैं।।

नवकोटि से वृषभादि जिन की, कर रहे शुभ अर्चना।
ग्रह शांति से परमार्थ सिद्धी, हेतु पद में वंदना।।2।।

ॐ ह्रीं सर्वग्रहारिष्ट निवारक श्री चतुर्विंशति तीर्थंकर जिनेन्द्रेभ्यो: संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

भटके बहुत अटके जगत में,पार पाने आए हैं।
अक्षय सुनिधि दो नाथ हमको, अक्षत चढ़ाने लाए हैं।।
नवकोटि से वृषभादि जिन की, कर रहे शुभ अर्चना।
ग्रह शांति से प रमार्थ सिद्धी, हेतु पद में वंदना।।3।।

ॐ ह्रीं सर्वग्रहारिष्ट निवारक श्री चतुर्विंशति तीर्थंकर जिनेन्द्रेभ्यो: अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

हम विषय तृष्णा के भँवर में, जानकर उलझाए हैं।
ना काम का हो वास उर में, पुष्प लेकर आए हैं।।
नवकोटि से वृषभादि जिन की, कर रहे शुभ अर्चना।
ग्रह शांति से परमार्थ सिद्धी, हेतु पद में वंदना।।4।।

ॐ ह्रीं सर्वग्रहारिष्ट निवारक श्री चतुर्विंशति तीर्थंकर जिनेन्द्रेभ्यो: कामबाणविध्वंशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

मन की इच्छाएँ कभी हम, पूर्ण ना कर पाए हैं।
अब क्षुधा व्याधी नाश करने, सरस व्यंजन लाए हैं।।
नवकोटि से वृषभादि जिनकी, कर रहे शुभ अर्चना।
ग्रह शांति से परमार्थ सिद्धी, हेतु पद में वंदना।।1।।

ॐ ह्रीं सर्वग्रहारिष्ट निवारक श्री चतुर्विंशति तीर्थंकर जिनेन्द्रेभ्यो: क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मोह का तम गहन छाया, दूर ना कर पाए हैं।
दीप में ज्योती जलाकर, तिमिर हरने आए हैं।।
नवकोटि से वृषभादि जिनकी, कर रहे शुभ अर्चना।
ग्रह शांति से परमार्थ सिद्धी, हेतु पद में वंदना।।6।।

ॐ ह्रीं सर्वग्रहारिष्ट निवारक श्री चतुर्विंशति तीर्थंकर जिनेन्द्रेभ्यो: मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

धूप सुरभित द्रव्यमय शुभ, यहाँ खेने लाए हैं।
यह कर्म आठों हैं अनादी, शांत करने आए हैं।।
नवकोटि से वृषभादि जिनकी, कर रहे शुभ अर्चना।
ग्रह शांति से परमार्थ सिद्धी, हेतु पद में वंदना।।7।।

ॐ ह्रीं सर्वग्रहारिष्ट निवारक श्री चतुर्विंशति तीर्थंकर जिनेन्द्रेभ्यो: अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्म के फल प्राप्त करके, यह जगत भटकाए हैं।
अब मोक्षफल पाने चरण में, फल चढ़ाने लाए हैं।।
नवकोटि से वृषभादि जिनकी, कर रहे शुभ अर्चना।
ग्रह शांति से परमार्थ सिद्धी, हेतु पद में वंदना।।8।।

ॐ ह्रीं सर्वग्रहारिष्ट निवारक श्री चतुर्विंशति तीर्थंकर जिनेन्द्रेभ्यो: मोक्षफलप्राप्ताय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

हम जलादिक द्रव्य आठों, का ये अर्घ्य बनाए हैं।
अब श्रेष्ठ शाश्वत सुपद पाने, को चरण में लाए हैं।।
नवकोटि से वृषभादि जिनकी, कर रहे शुभ अर्चना।
ग्रह शांति से परमार्थ सिद्धी, हेतु पद में वंदना।।9।।

ॐ ह्रीं सर्वग्रहारिष्ट निवारक श्री चतुर्विंशति तीर्थंकर जिनेन्द्रेभ्यो: अनर्घपदप्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा– **जलधारा देते शुभम्, पूजाकर हे नाथ!**
नवग्रह मेरे शांत हों, चरण झुकाएँ माथ।।

(शांतये शांतिधारा)

दोहा– **पुष्पों से पुष्पांजलि, करते हैं हम आन।**
चरणों में वन्दन प्रभो! रहे आपका ध्यान।।

(पुष्पांजलि क्षिपेत्)

(प्रथम वलय:)

दोहा– **जगत पूज्य तुम हो प्रभो! जगती पति जगदीश।**
पुष्पाञ्जलि कर पूजते, चरण झुकाते शीश।।

(प्रथम वलयोपरि दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्)

नवग्रह अरिष्ट निवारक अर्घ्य

(चौपाई)

ग्रहारिष्ट रवि शांति पाए, पद्म प्रभु पद शीश झुकाए।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाएँ, सुख-शान्ती सौभाग्य जगाएँ॥1॥

ॐ ह्रीं रविग्रहारिष्ट निवारक श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ग्रहारिष्ट चन्द्र जिन स्वामी, शांति किए होके शिवगामी।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाएँ, सुख-शान्ति सौभाग्य जगाएँ॥2॥

ॐ ह्रीं चन्द्रग्रहारिष्ट निवारक श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नहीं भौम ग्रह भी रह पाए, वासुपूज्य को पूज रचाए।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाएँ, सुख-शान्ति सौभाग्य जगाएँ॥3॥

ॐ ह्रीं भौमग्रहारिष्ट निवारक श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विमलादी वसु जिन को ध्यायें, ग्रहारिष्ट बुध पूर्ण नशाएँ।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाएँ, सुख-शान्ति सौभाग्य जगाएँ॥4॥

ॐ ह्रीं बुधग्रहारिष्ट निवारक श्री विमल, अनंत, धर्म, शांति, कुन्थु, अरह, नमि, वर्धमान अष्ट जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऋषभादिक वसु जिन शिवकारी, ग्रहारिष्ट गुरु नाशनहारी।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाएँ, सुख-शान्ति सौभाग्य जगाएँ॥5॥

ॐ ह्रीं सुरगुरुदोष निवारक श्री ऋषभ, अजित, संभव, अभिनन्दन, सुमति, सुपारस, शीतल, श्रेयांस अष्ट जिनवरेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शुक्रारिष्ट निवारक गाए, पुष्पदन्त स्वामी मन भाए।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाएँ, सुख-शान्ति सौभाग्य जगाएँ॥6॥

ॐ ह्रीं शुक्रग्रहारिष्ट निवारक श्री पुष्पदन्त जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मुनिसुव्रत की महिमा गाए, शनि अरिष्ट ग्रह ना रह पाए।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाएँ, सुख-शान्ति सौभाग्य जगाएँ॥7॥

ॐ ह्रीं शनिग्रहारिष्ट निवारक श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

राहू ग्रह के है प्रभु नाशी, नेमिनाथ जिन शिवपुर वासी।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाएँ, सुख-शान्ति सौभाग्य जगाएँ॥8॥

ॐ ह्रीं राहुग्रहारिष्ट निवारक श्री नेमिनाथ जिनेन्द्रेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ग्रहारिष्ट केतू नश जाए, मल्लि पार्श्व का ध्यान लगाए।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाएँ, सुख-शान्ति सौभाग्य जगाएँ॥9॥

ॐ ह्रीं राहुग्रहारिष्ट निवारक श्री मल्लि-पार्श्व जिनेन्द्रेभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चौबिस जिनवर को जो ध्याते, ग्रहारिष्ट से शांती पाते।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाएँ, सुख-शान्ति सौभाग्य जगाएँ॥10॥

ॐ ह्रीं सर्वग्रहारिष्ट निवारक श्री चतुर्विंशति तीर्थंकर जिनेन्द्रेभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जाप्य मंत्र–ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्र: अ सि आ उ सा सर्व ग्रहारिष्ट शांतिं कुरु-कुरु स्वाहा।

जयमाला

दोहा– **गगन मध्य में ग्रहों का, फैला भारी जाल।**
ग्रह शांती के हेतु हम, गाते हैं जयमाल॥

(कुसुमलता छन्द)

ऋषभ चिह्न लख वृषभनाथ पद, 'विशद' भाव से करूँ नमन्।
गज लक्षण है अजितनाथ का, उनके चरणों नित वंदन॥
अश्व चिह्न संभव जिनवर का, नृप जितारि के प्रभु नंदन।
मर्कट चिह्न चरण अंकित है, अभिनंदन को शत् वंदन॥
सुमति जिनेश्वर के पद चकवा, जिन का करते अभिनंदन।
पद्म चिह्न है पद्मप्रभु पद, लेकर पद्म करूँ अर्चन॥
स्वस्तिक चिह्न सुपार्श्वनाथ का, दर्शन कर नित करूँ भजन।
चन्द्र चिह्न चंदा प्रभु वंदौ, करूँ निजातम का दर्शन॥
मगर चिह्न श्री सुविधिनाथ पद, पुष्पदंत उपनाम शुभम्।
कल्पवृक्ष शीतल जिन स्वामी, मुद्रा जिनकी शांत परम॥
गेंडा चिह्न चरण में लख के, जिन श्रेयांस को करूँ नमन।
भैंसा चिह्न श्री वासुपूज्य पद, देख करूँ शत्-शत् वंदन॥
विमलनाथ का चिह्न है सूकर, विमल रहे मेरे भगवन्।
सेही चिह्न है अनंतनाथ पद, उनको सादर करूँ नमन्॥
वज्र चिह्न प्रभु धर्मनाथ पद, नमन करूँ हो धर्म गमन।
शांतिनाथ का हिरण चिह्न शुभ, शांति दो मेरे भगवन्॥
कुंथुनाथ अज चरण देखकर, पाऊँ मैं सम्यग्दर्शन।
अरहनाथ का चिह्न मीन है, वीतराग जिन को वन्दन॥

कलश चिह्न लख मल्लिनाथ को, वंदूँ पाऊँ ज्ञान सघन।
कछुवा चिह्न मुनिसुव्रत जिन का, वन्दन कर हो जाऊँ मगन॥
चरण पखारूँ नमिनाथ के, लखकर नीलकमल लक्षण।
शंख चिह्न पद नेमिनाथ के, इन्द्रिय का जो किए दमन॥
चिह्न सर्प का पार्श्वनाथ पद, लखकर करूँ चरण वंदन।
वर्धमान पद सिंह देखकर, करूँ चरण का अभिनंदन॥
वृषभादि महावीर प्रभु की, करूँ नित्य सविनय पूजन।
चौबीसों तीर्थंकर प्रभु के, चरणों में शत्-शत् वंदन॥

दोहा– **जलधारा देते शुभम्, पूजाकर हे नाथ!**
नवग्रह मेरे शांत हों, चरण झुकाएँ माथ॥

ॐ ह्रीं सर्वग्रहारिष्ट निवारक श्री चतुर्विंशति तीर्थंकर जिनेन्द्रेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्व. स्वाहा।

सोरठा– **चौबीसों जिनदेव, मंगलमय मंगल परम।**
मंगल करें सदैव, नवग्रह बाधा शांत हो॥

इति पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

शब्द ब्रह्म पूजा

स्थापना

आत्म ब्रह्म जाने बिना, परम ब्रह्म न पाते हैं।
लौकिक आगम मात्र जल्पना, बिना शब्द नश जाते हैं॥
अनेकान्त अरु स्याद्वाद शुभ, निश्चय नय हो या व्यवहार।
शब्द ब्रह्म से ही चलता है, पूज्य पूज्यता का व्यापार॥

ॐ ह्रीं चतु:षष्ठि अक्षर संयोगज एकट्ठिप्रमाण शब्द ब्रह्म! अत्र अवतर-अवतर संवौषट्इत्याह्वानम्। अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। अत्र मम् सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणं।

(छंद-जोगीरासा)

प्रासुक करके नीर कूप का, यहाँ चढ़ाने लाए।
ज्ञानावरणी कर्म नाश कर, ज्ञान जगाने आए॥
शब्द ब्रह्म की पूजा करके, आत्म ब्रह्म प्रगटाएँ।
यह संसार असार छोड़कर, शिवपुर धाम बनाएँ॥1॥

ॐ ह्रीं चतु:षष्ठि अक्षर संयोगज एकट्ठिप्रमाण शब्दब्रह्मणे जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

केशर चन्दन श्रेष्ठ सुगन्धित, अर्पित करने लाए।
कर्म दर्शनावरण नाशकर, दर्शन पाने आए।।
शब्द ब्रह्म की पूजा करके, आत्म ब्रह्म प्रगटाएँ।
यह संसार असार छोड़कर, शिवपुर धाम बनाएँ।।2।।

ॐ ह्रीं चतु:षष्ठि अक्षर संयोगज एकट्ठिप्रमाण शब्दब्रह्मणे संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

अक्षय अक्षत धवल सुगन्धित, अर्पित करने लाए।
कर्म नाशकर वेदनीय हम, अव्याबाध गुण पाए।।
शब्द ब्रह्म की पूजा करके, आत्म ब्रह्म प्रगटाएँ।
यह संसार असार छोड़कर, शिवपुर धाम बनाएँ।।3।।

ॐ ह्रीं चतु:षष्ठि अक्षर संयोगज एकट्ठिप्रमाण शब्दब्रह्मणे अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

सुरभित पुष्प सुगन्धित अनुपम, भाँति-भाँति के लाए।
गुण सम्यक्त्व प्रकट करके हम, मोह नशाने आए।।
शब्द ब्रह्म की पूजा करके, आत्म ब्रह्म प्रगटाएँ।
यह संसार असार छोड़कर, शिवपुर धाम बनाएँ।।4।।

ॐ ह्रीं चतु:षष्ठि अक्षर संयोगज एकट्ठिप्रमाण शब्दब्रह्मणे कामबाण विध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

पूजा को नैवेद्य सरस शुभ, ताजे श्रेष्ठ बनाए।
अवगाहन गुण पाने हेतू, कर्मायू नश जाए।।
शब्द ब्रह्म की पूजा करके, आत्म ब्रह्म प्रगटाएँ।
यह संसार असार छोड़कर, शिवपुर धाम बनाएँ।।5।।

ॐ ह्रीं चतु:षष्ठि अक्षर संयोगज एकट्ठिप्रमाण शब्दब्रह्मणे क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

घृत का दीप जलाकर जगमग, आरति करने लाए।
गुण सूक्ष्मत्व प्रकट हो मेरा, नाम कर्म नश जाए।।
शब्द ब्रह्म की पूजा करके, आत्म ब्रह्म प्रगटाएँ।
यह संसार असार छोड़कर, शिवपुर धाम बनाएँ।।6।।

ॐ ह्रीं चतु:षष्ठि अक्षर संयोगज एकट्ठिप्रमाण शब्दब्रह्मणे मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

अग्नी में यह धूप दशांगी, यहाँ जलाने लाए।
अगुरुलघु गुण प्राप्त हमें हो, गोत्र कर्म नश जाए।।
शब्द ब्रह्म की पूजा करके, आत्म ब्रह्म प्रगटाएँ।
यह संसार असार छोड़कर, शिवपुर धाम बनाएँ।।7।।

ॐ ह्रीं चतु:षष्ठि अक्षर संयोगज एकट्ठिप्रमाण शब्दब्रह्मणे अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

फल अनुपम ले सरस सुगन्धित, पूजा करने आए।
गुण वीर्यत्व प्राप्त हो हमको, अन्तराय नश जाए।।
शब्द ब्रह्म की पूजा करके, आत्म ब्रह्म प्रगटाएँ।
यह संसार असार छोड़कर, शिवपुर धाम बनाएँ।।8।।

ॐ ह्रीं चतु:षष्ठि अक्षर संयोगज एकट्ठिप्रमाण शब्दब्रह्मणे मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

पद अनर्घ पाने हम अतिशय, अर्घ्य बनाकर लाए।
अष्ट कर्म हों नाश हमारे, सिद्ध सुपद मिल जाए।।
शब्द ब्रह्म की पूजा करके, आत्म ब्रह्म प्रगटाएँ।
यह संसार असार छोड़कर, शिवपुर धाम बनाएँ।।9।।

ॐ ह्रीं चतु:षष्ठि अक्षर संयोगज एकट्ठिप्रमाण शब्दब्रह्मणे अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

द्वितीय वलय:

शब्द ब्रह्म के अर्घ्य

अकारादि स्वर अर्द्ध मात्रिक, व्यञ्जन रहित कहाते हैं।
सबसे पहले पूर्व दिशा में, उनको अर्घ्य चढ़ाते हैं।।1।।

ॐ ह्रीं ह्रस्व दीर्घ प्लुत भेद सहित अ इ उ ऋ लृ ए ऐ ओ औ स्वरेभ्य: अं अ: अयोगवाहेभ्यश्च पूर्वदिशि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रथम वर्ग क वर्ग कहा है, क ख ग घ ङ है नाम।
आग्नेय में पूजा करके, सब सिद्धों को करूँ प्रणाम।।2।।

ॐ ह्रीं आग्नेय दिशि क ख ग घ ङ इति क वर्गाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्रेष्ठ रहा च वर्ग यहाँ पर, च छ ज झ ञ है नाम।
दक्षिण दिशि में स्थापित कर, अर्घ्य चढ़ा के करें प्रणाम।।3।।

ॐ ह्रीं दक्षिण दिशि च छ ज झ ञ इति च वर्गाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूज रहे ट वर्ग यहाँ पर, दिशा रही नैऋत्य महान।
ट ठ ड ढ ण अक्षर का, करते यहाँ विशद गुणगान।।4।।

ॐ ह्रीं नैऋत्य दिशि ट ठ ड ढ ण इति ट वर्गाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

त थ द ध न अक्षर का, श्रेष्ठ कहा त वर्ग प्रधान।
पश्चिम दिश में पूज रहे हैं, जिससे बढ़ता सम्यक् ज्ञान।।5।।

ॐ ह्रीं पश्चिम दिशि त थ द ध न इति तवर्गाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

औष्ठ से उच्चारण हो जिसका, वह प वर्ग कहा शुभकार।
प फ ब भ म की पूजा, वायव्य में करते शुभकार।।6।।

ॐ ह्रीं वायव्य दिशि प फ ब भ म इति पवर्गाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

य र ल व चार वर्ण यह, कहलाते अन्तस्थ महान।
उत्तर दिशा में पूजा करके, करते यहाँ विशद गुणगान।।7।।

ॐ ह्रीं उत्तर दिशि य र ल व इति अन्तस्थाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऊष्म घोष जिनको कहते हैं, श ष स ह वर्ण प्रधान।
पूजा करते भक्ति भाव से, जिनकी दिशा रही ईशान।।8।।

ॐ ह्रीं ईशान दिशि श ष स ह इति ऊष्म वर्णेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अक्षर क्रमशः आदि में ह भ, य र घ झ स ख जान।
अन्त में ह्म्ल्व्र्यूं को रखकर, आठ मंत्र की हो पहिचान।।
क्रमशः इक इक शोभित होते, आठों कोठों में शुभकार।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाकर, पूजा करके मंगलवार।।9।।

ॐ ह्रीं हकारादि अष्टाक्षर संयुक्त ह्म्ल्व्र्यूं आदि अष्ट बीजाक्षरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा- **शब्द ब्रह्म को पूजकर, करना निज उद्धार।**
जयमाला गाते यहाँ, पाने भवदधि पार।।

(चाल छन्द)

स्वर अकारादि शुभ गाए, अ इ उ ऋ कहलाए।
लृ ए ऐ ओ औ जानो, ह्रस्व दीर्घ प्लुत पहिचानो।।
सब सत्ताइस हो जाते, जो स्वर संज्ञा को पाते।
हैं पंच वर्ग 'क' आदि, अन्तस्थ य र ल वादि।।
श ष स ह ऊष्मक गाये, चउ अयोगवाह कहलाए।
सब चौंसठ अक्षर मानो, जो जैनागम से जानो।।
इनके द्वि आदि संयोगी, कई भेद कहे जिन योगी।
इकट्ठी श्रुत हो जाते, सब द्वादशांग में आते।।
आतम परमातम दोई, के ज्ञान में कारण होई।
श्रुत बोध जनावन हारे, ज्ञानी जन भी उच्चारे।।
आश्रय जो इनका पावें, वह सारे कार्य बनावें।
मन की सब कहते भाई, जाने पर की प्रभुताई।।
इनको जो मन से ध्यावें, मूरख भी ज्ञान बढ़ावें।
बिन स्वर व्यञ्जन के कोई, व्यवहार चले न सोई।।
इनका उपपाद न होई, क्षरना इनका न कोई।
अक्षर इसलिए कहाए, जो काल अनादि गाए।।
ज्यों सिद्ध अनादी गाए, त्यों वर्ण सिद्ध कहलाए।
सिद्धों सम पूजे जाते, नवकार मंत्र में आते।।
शिव कारण पैंतीस जानो, सोलह छह पंच बखानो।
गणधर आदिक सब गाते, जिनवाणी में भी आते।।
सब में तुमरी प्रभुताई, शिव मार्ग चलाते भाई।
गुण 'विशद' आपके गाते, पद सादर शीश झुकाते।।

दोहा– **शब्द ब्रह्म को पूजकर, पाओ शिव का द्वार।**
शब्दों से पूजा रची, जग में मंगलकार।।
आलम्बन नाना कहे, मुक्ति हेतु महान।
हो पदस्थ शुभ ध्यान से, मुक्ती पद की खान।।

ॐ ह्रीं चतु:षष्ठि अक्षर संयोगज एकट्ठिप्रमाण शब्दब्रह्मणे जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सोरठा– **शब्द ब्रह्म को पूजकर, पाना है शिव धाम।**
विशद भाव से हम यहाँ, करते 'विशद' प्रणाम।।

इत्याशीर्वाद:

सरस्वती पूजन

स्थापना

श्री जिनेन्द्र के मुख से खिरती, दिव्य ध्वनि अतिशय पावन।
द्वादश कोठों में सब के हित, ॐकारमय मन भावन॥
द्वादशांग में जिसकी रचना, गणधर करते श्रेष्ठ महान्।
जिनवाणी का विशद हृदय से, करते आज यहाँ आह्वान्॥
हे जिनवाणी माँ! भव्यों के, अन्तर का अज्ञान हरो।
शरणागत बन आए शरण में, मात शीघ्र कल्याण करो॥

ॐ ह्रीं श्री जिनमुखोद्भव सरस्वती देव्यै:! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वाननं।
ॐ ह्रीं श्री जिनमुखोद्भव सरस्वती देव्यै:! अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।
ॐ ह्रीं श्री जिनमुखोद्भव सरस्वती देव्यै:! अत्र मम् सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणं।

(शम्भू छन्द)

प्रभु भाव रहे मेरे कलुषित, वह शुद्ध नहीं हो पाए हैं।
जल सम निर्मलता पाने को, यह नीर चढ़ाने लाए हैं॥
जिनवर की वाणी जिनवाणी, को भाव सहित हम ध्याते हैं।
जागे अन्तर में ज्ञान विशद, हम सादर शीश झुकाते हैं॥1॥

ॐ ह्रीं जिनमुखोद्भव सरस्वती देव्यै जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

ईर्ष्या के कारण से हर क्षण, संतापित होते आए हैं।
चंदन सम समशीतलता पाने, यह चंदन घिसकर लाए हैं॥
जिनवर की वाणी जिनवाणी को, भाव सहित हम ध्याते हैं।
जागे अन्तर में ज्ञान विशद, हम सादर शीश झुकाते हैं॥2॥

ॐ ह्रीं जिनमुखोद्भव सरस्वती देव्यै संसारताप विनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

आतम अखण्ड है सत्य एक, उसको हम जान न पाए हैं।
अब पद अखण्ड अक्षय पाने, यह अक्षत लेकर आए हैं।
जिनवर की वाणी जिनवाणी को, भाव सहित हम ध्याते हैं।
जागे अन्तर में ज्ञान विशद, हम सादर शीश झुकाते हैं॥3॥

ॐ ह्रीं जिनमुखोद्भव सरस्वती देव्यै अक्षय पद प्राप्ताय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

भव भोगों के सुख पाने को, हम मोह में फँसते आए हैं।
अब मुक्ती पाने भोगों से, यह पुष्प चढ़ाने लाए हैं।।
जिनवर की वाणी जिनवाणी को, भाव सहित हम ध्याते हैं।
जागे अन्तर में ज्ञान विशद, हम सादर शीश झुकाते हैं।।4।।

ॐ ह्रीं जिनमुखोद्भव सरस्वती देव्यै कामबाण विध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

रसना के रस को चखने से, तृष्णा ही बढ़ाते आए हैं।
तन-मन की क्षुधा मिटाने को, नैवेद्य चढ़ाने लाए हैं।।
जिनवर की वाणी जिनवाणी को, भाव सहित हम ध्याते हैं।
जागे अन्तर में ज्ञान विशद, हम सादर शीश झुकाते हैं।।5।।

ॐ ह्रीं जिनमुखोद्भव सरस्वती देव्यै क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भटके हैं मोह-तिमिर में हम, अन्तर में झाँक न पाए हैं।
निज ज्ञान दीप जगमग करने, यह दीप जलाकर लाए हैं।।
जिनवर की वाणी जिनवाणी को, भाव सहित हम ध्याते हैं।
जागे अन्तर में ज्ञान विशद, हम सादर शीश झुकाते हैं।।6।।

ॐ ह्रीं जिनमुखोद्भव सरस्वती देव्यै मोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्मों की धूप में सदियों से, परवश हो जलते आए हैं।
अब छाया पाने चेतन की, यह धूप जलाने लाए हैं।।
जिनवर की वाणी जिनवाणी को, भाव सहित हम ध्याते हैं।
जागे अन्तर में ज्ञान विशद, हम सादर शीश झुकाते हैं।।7।।

ॐ ह्रीं जिनमुखोद्भव सरस्वती देव्यै अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

शुभ रत्नत्रय के फल अनुपम, वह फल हमने न पाए हैं।
अब सम्यक् दर्शन के प्रतिफल, पाने फल लेकर आए हैं।।
जिनवर की वाणी जिनवाणी को, भाव सहित हम ध्याते हैं।
जागे अन्तर में ज्ञान विशद, हम सादर शीश झुकाते हैं।।8।।

ॐ ह्रीं जिनमुखोद्भव सरस्वती देव्यै मोक्षफलप्राप्ताय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

शुभ महाशक्ति की पुंज द्रव्य, उससे यह अर्घ्य बनाए हैं।
पाने अनर्घ पद अविनाशी, यह अर्घ्य चढ़ाने लाए हैं।।

जिनवर की वाणी जिनवाणी को, भाव सहित हम ध्याते हैं।
जागे अन्तर में ज्ञान विशद, हम सादर शीश झुकाते हैं।।9।।
ॐ ह्रीं जिनमुखोद्भव सरस्वती देव्यै अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- **प्रासुक निर्मल नीर से, देते हैं त्रय धार।**
जीवन सुखमय शांत हो, होवे धर्म प्रचार।।
(शांतये शांतिधारा)

दोहा- **परम सुगंधित पुष्प यह, लेकर अपरम्पार।**
पुष्पांजलि करते विशद, पाने भव से पार।।
(पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

(तृतीय वलय:)

दोहा- **माँ जिनवाणी के रहे, आठ एक सौ नाम।**
पुष्पाञ्जलि कर पूजते, करके विशद प्रणाम।।
(तृतीय वलयोपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्)

अथ शत नामाष्टक अर्घ्य

(शम्भू छन्द)

आदि ब्रह्म के ''मुखाम्भोज'' से, प्रहसित दिव्य ध्वनि पावन।
नय प्रमाण रूपी लहरों युत, गणधर झेली मनभावन।।
ज्ञान भारती माँ जिनवाणी, सरस्वती आदिक कई नाम।
अर्घ्य चढ़ाते भक्ति भाव से, करके बारम्बार प्रणाम।।1।।
ॐ ह्रीं श्री आदिब्रह्ममुखाम्भोज प्रभवायै नम: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

''द्वादशांग'' से शोभित माता, धवल वस्त्र धारे अभिराम।
मस्तक पर जिन प्रतिमा सोहे, जिनगृह में पाती विश्राम।।
ज्ञान भारती माँ जिनवाणी, सरस्वती आदिक कई नाम।
अर्घ्य चढ़ाते भक्ति भाव से, करके बारम्बार प्रणाम।।2।।
ॐ ह्रीं द्वादशांगायै नम: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मात सरस्वती की वीणा में, 'सब भाषाएँ' झरती हैं।
शब्द वाक्य पद छन्द प्रगट हों, मन आह्लादित करती हैं।।
ज्ञान भारती माँ जिनवाणी, सरस्वती आदिक कई नाम।
अर्घ्य चढ़ाते भक्ति भाव से, करके बारम्बार प्रणाम।।3।।
ॐ ह्रीं सर्वभाषायै नम: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

माँ ''वाणी'' जिनवाणी अनुपम, जन-जन की कल्याणी है।
भाव सहित जो हृदय बसाए, भव-भव में सुखदानी है॥
ज्ञान भारती माँ जिनवाणी, सरस्वती आदिक कई नाम।
अर्घ्य चढ़ाते भक्ति भाव से, करके बारम्बार प्रणाम॥4॥

ॐ ह्रीं वाण्यै नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

द्रव्य तत्त्व का सार भरा है, अतः ''शारदे'' नाम कहा।
छोड़ असार सार पद देना, जिनवाणी का काम रहा॥
ज्ञान भारती माँ जिनवाणी, सरस्वती आदिक कई नाम।
अर्घ्य चढ़ाते भक्ति भाव से, करके बारम्बार प्रणाम॥5॥

ॐ ह्रीं शारदायै नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गिरि अज्ञान भेदने वाली, ''गिर'' कहलाती है माता।
गिरे हुए को आप उठाकर, देने वाली हो साता।
ज्ञान भारती माँ जिनवाणी, सरस्वती आदिक कई नाम।
अर्घ्य चढ़ाते भक्ति भाव से, करके बारम्बार प्रणाम॥6॥

ॐ ह्रीं गिरे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

''सरस्वती'' माँ सरस मती है, सारे रस तुमने पाए।
जिसमें रस है श्रुत अमृत का, मम उर में वह प्रगटाए॥
ज्ञान भारती माँ जिनवाणी, सरस्वती आदिक कई नाम।
अर्घ्य चढ़ाते भक्ति भाव से, करके बारम्बार प्रणाम॥7॥

ॐ ह्रीं सरस्वत्यै नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिन ''ब्रह्मा'' के द्वारा प्रगटित, है चैतन्य ब्रह्म में वास।
हृदय बसाए मात आपको, उसकी होवे पूरी आस॥
ज्ञान भारती माँ जिनवाणी, सरस्वती आदिक कई नाम।
अर्घ्य चढ़ाते भक्ति भाव से, करके बारम्बार प्रणाम॥8॥

ॐ ह्रीं ब्राह्मयै नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वाक्य-वाक्य में स्वर व्यंजन या, बीजाक्षर का है संयोग।
''वाग्देवी'' कहलाने वाली, जिनवाणी का पावन योग॥
ज्ञान भारती माँ जिनवाणी, सरस्वती आदिक कई नाम।
अर्घ्य चढ़ाते भक्ति भाव से, करके बारम्बार प्रणाम॥9॥

ॐ ह्रीं वाग्देवतायै नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शरणागत को विद्या दात्री, ''देवी'' जग में रही महान।
भक्त जनों को निस्पृह होकर, देती है विद्या का दान॥
ज्ञान भारती माँ जिनवाणी, सरस्वती आदिक कई नाम।
अर्घ्य चढ़ाते भक्ति भाव से, करके बारम्बार प्रणाम॥10॥

ॐ ह्रीं देव्यै नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ज्ञान गुणों से भरने वाली, ज्ञान 'भारती' रही प्रधान।
भाग्य विधात्री भवि जीवों की, अतः करें सब ही गुणगान॥
ज्ञान भारती माँ जिनवाणी, सरस्वती आदिक कई नाम।
अर्घ्य चढ़ाते भक्ति भाव से, करके बारम्बार प्रणाम॥11॥

ॐ ह्रीं भारत्यै नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

है 'निवासनी'' नाम आपका, ज्ञानी के उर तेरा वास।
चेतन और अचेतन द्रव्यों, का तुमने ही किया प्रकाश॥
ज्ञान भारती माँ जिनवाणी, सरस्वती आदिक कई नाम।
अर्घ्य चढ़ाते भक्ति भाव से, करके बारम्बार प्रणाम॥12॥

ॐ ह्रीं निवासिन्यै नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अंग अंग में ज्ञान भरा है, अंग पूर्व की दाता है।
'आचार सूत्र' प्रदायक पावन, पद में मिलती साता हैं॥
ज्ञान भारती माँ जिनवाणी, सरस्वती आदी कई नाम।
अर्घ्य चढ़ाते भक्ति भाव से, करके बारम्बार प्रणाम॥13॥

ॐ ह्रीं आचार सूत्र कृतपादायै नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'स्थानांग अरु समवायांग' यह, जंघाएँ शुभ गाईं हैं।
पद भक्तों की शंकाएँ सब, तूने मात मिटाईं हैं॥
ज्ञान भारती माँ जिनवाणी, सरस्वती आदी कई नाम।
अर्घ्य चढ़ाते भक्ति भाव से, करके बारम्बार प्रणाम॥14॥

ॐ ह्रीं स्थानांग समवायांगजंघायै नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिन शासन का व्याख्या कारी, 'व्याख्या प्रज्ञप्ती' सद्ज्ञान।
धर्म कथा का वर्णन जिसमें, 'ज्ञातृ धर्म कथांग' महान॥
ज्ञान भारती माँ जिनवाणी, सरस्वती आदी कई नाम।
अर्घ्य चढ़ाते भक्ति भाव से, करके बारम्बार प्रणाम॥15॥

ॐ ह्रीं व्याख्या प्रज्ञप्ति-ज्ञातृ-धर्मकथांग नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'उपाशकाध्यानांग' है उदर आपका, श्रावक धर्म बताता है।
साधु की चर्चा का भी जो, सबको ज्ञान कराता है।।
ज्ञान भारती माँ जिनवाणी, सरस्वती आदी कई नाम।
अर्घ्य चढ़ाते भक्ति भाव से, करके बारम्बार प्रणाम।।16।।

ॐ ह्रीं उपासकध्यानांग सन्मध्यायै नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'अंतकृद्दशांग नाभी' शुभ, जिसकी पावन कहलाई।
अनहद नाद गुंजाने वाली, चमत्कार मय बतलाई।।
ज्ञान भारती माँ जिनवाणी, सरस्वती आदी कई नाम।
अर्घ्य चढ़ाते भक्ति भाव से, करके बारम्बार प्रणाम।।17।।

ॐ ह्रीं अंतकृद्दशांग नाभिकायै नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'आनुत्तरोपपादिक दशांग' अरु, प्रश्न व्याकरण अंग अहा।
रहे कलश कुच शुभ माता के, जिससे ज्ञान का क्षीर बहा।।
ज्ञान भारती माँ जिनवाणी, सरस्वती आदी कई नाम।
अर्घ्य चढ़ाते भक्ति भाव से, करके बारम्बार प्रणाम।।18।।

ॐ ह्रीं अनुत्तरोपादिक दशांग प्रश्नव्याकरणस्तन्यै नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'विपाक सूत्रांग' श्रेष्ठ माता का, वक्षस्थल पावन मनहार।
कर्मों का फल जो दिखलाए, पुण्य भाव का जो आधार।।
ज्ञान भारती माँ जिनवाणी, सरस्वती आदी कई नाम।
अर्घ्य चढ़ाते भक्ति भाव से, करके बारम्बार प्रणाम।।19।।

ॐ ह्रीं विपाकसूत्र सद्वक्षसे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'दृष्टि प्रवाद अंग' शुभ माँ का, अंक कहाँ अतिशयकारी।
जिसमें भूले भटके प्राणी, पाएँ श्रद्धा शुभकारी।।
ज्ञान भारती माँ जिनवाणी, सरस्वती आदी कई नाम।
अर्घ्य चढ़ाते भक्ति भाव से, करके बारम्बार प्रणाम।।20।।

ॐ ह्रीं दृष्टिवादांग अंकधरायै नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(सखी छन्द)

'परिकर्म सूत्र शुभ जानो, विपुलांश' कंठ पहिचानो।
जिससे माँ शोभा पाए, हम अर्घ्य चढ़ाने लाए।।21।।

ॐ ह्रीं परिकर्म महासूत्रविपुलांस विराजितायै नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'रवि शशि प्रज्ञप्ती' भाई, बाहुलता मय बतलाई।
रवि शशि का ज्ञान कराए, हम अर्घ्य चढ़ाने लाए।।22।।

ॐ ह्रीं चन्द्रमार्तड प्रज्ञप्ति भास्वद्बाहुसुबल्लयै नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शुभ 'द्वीप सागर प्रज्ञप्ती', कर श्रेष्ठ जानिए ज्ञप्ती।
दीपादि का ज्ञान कराए, हम अर्घ्य चढ़ाने लाए।।23।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसागर प्रज्ञप्ति सत्करायै नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'व्याख्या प्रज्ञप्ती' भाई, अंगुली शाखाएँ गाईं।
जिसकी पाँच शाखाएँ, हम अर्घ्यं चढ़ाने लाएँ।।24।।

ॐ ह्रीं व्याख्याप्रज्ञप्ति विभ्राजत्पंचशाखा मनोहरायै नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'प्रथमानुयोग' हे माता, तव वदन श्रेष्ठ कहलाता।
चारित पुराण शुभ गाए, हम अर्घ्य चढ़ाने लाए।।25।।

ॐ ह्रीं प्रथमानुयोगवदनायै नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'पूरवगत चिबुक' कहाए, जो तत्त्व अर्थ प्रगटाए।
नित मन से माँ को ध्याएँ, हम अर्घ्य चढ़ाने लाएँ।।26।।

ॐ ह्रीं पूर्वाख्यचिबुकांचितायै नमः अर्घ्य निर्वपामीति स्वाहा।

'उत्पाद पूर्व' है नाशा, जिससे हो जगत प्रकाशा।
है उन्नत सौर्य निराला, जग का तम हरने वाला।।27।।

ॐ ह्रीं उत्पादपूर्व सन्नासायै नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'अग्रायणी पूरव' भाई, शुभ दन्तावलि सुखदायी।
जो ज्ञान रश्मि प्रगटाए, जग को सन्मार्ग दिखाए।।28।।

ॐ ह्रीं अग्रायणीयदंतायै नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

है 'वीर्यानुवाद' शुभकारी, अस्ति नास्ति प्रवाद मनहारी।
है अधर आपके माता, जिसमें ब्रह्माण्ड समाता।।29।।

ॐ ह्रीं वीर्यानुप्रवाद-अस्तिनास्ति प्रवादोष्ठायै नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

माँ 'ज्ञान प्रवाद' तुम्हारे, सुन्दर कपोल हैं न्यारे।
जो वृत्ताकार बताए, हम अर्घ्य चढ़ाने लाए।।30।।

ॐ ह्रीं ज्ञान प्रवाद कपोलायै नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

है 'सत्य प्रवाद' तुम्हारी, रसना इन्द्री शुभकारी।
है सत्य सुधामृत वाणी, हित मित प्रिय जग कल्याणी।।31।।
ॐ ह्रीं सत्यप्रवादरसनायै नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शुभ 'आत्म प्रवाद' कहाए, महा हनु उपमा पाए।
जिस पर श्रद्धा धर प्राणी, सुनते हैं माँ की वाणी।।32।।
ॐ ह्रीं आत्मप्रवाद महाहनवे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(चौपाई)

तालू 'कर्म प्रवाद' कहाए, चाल कर्म की जो समझाए।
माँ के चरणों जो झुक जाए, उसको शिवपद राह दिखाए।।33।।
ॐ ह्रीं कर्मप्रवाद सत्तालवे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'प्रत्याख्यान' प्रवाद कहाया, उच्च ललाट श्रेष्ठ बतलाया।
उच्च ज्ञान जग को सिखलाए, ऊपर का शुभ मार्ग बताए।।34।।
ॐ ह्रीं प्रत्याख्यानललाट्यै नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'विद्यानुवाद' पूर्व हे भाई!, द्वय लोचन हैं मंगलदायी।
माँ के चरणों जो झुक जाए, उसको शिवपद राह दिखाए।।35।।
ॐ ह्रीं विद्यानुवाद-कल्याण नाम धेय सुलोचनायै नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'प्राणावाय' पूर्व शुभकारी, भृगुटी है माँ की मनहारी।
क्रिया विशाल पूर्व शुभ जानो, भृगुटी माँ की दूजी मानो।।36।।
ॐ ह्रीं प्राणावाय क्रिया विशाल पूर्व भ्रूधनुर्लतायै नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'लोक बिन्दु' महा सार हे भाई, और चूलिका मंगलदायी।
माँ के दोनों श्रवण कहाए, भक्त जनों के मन को भाए।।37।।
ॐ ह्रीं लोकबिंदु महासार चूलिका श्रवणद्वयायै नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भेद चूलिका का मनहारी, 'स्थलगता' है अतिशयकारी।
उत्तम शीर्ष मात का जानो, उत्तम पदवी दाता मानो।।38।।
ॐ ह्रीं स्थलगताख्यलसच्छीर्षायै नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

केश राशि 'जलगता' कहाए, भेद चूलिका का कहलाए।
मन को स्थिर करने वाला, भेद ज्ञान का रहा निराला।।39।।
ॐ ह्रीं जलगताख्यमहाकचायै नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

है लावण्य मात का भाई, 'माया गता' श्रेष्ठ सुखदायी।
उपमातीत रहा शुभकारी, सर्व जहाँ में विस्मयकारी।।40।।

ॐ ह्रीं श्री मायागतासुलावण्यायै नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'रूपगता' शुभ रूप बताया, जो सब भव्यों के मन भाया।
माँ को ध्याने वाला प्राणी, अल्प समय में होता ज्ञानी।।41।।

ॐ ह्रीं रूपगताख्यसुरूपिण्यै नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'गगनगता' सौंदर्य कहाए, त्रिभुवन पूजित मन को भाए।
शुद्ध आत्म सौन्दर्य दिलाए, भाव सहित जो ध्यान लगाए।।42।।

ॐ ह्रीं आकाशगता सौंदर्यायै नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'मोर' आपका वाहन गाया, दिव्य देशना सुन हर्षाया।
पीछी श्रमणों को दिलवाए, श्रावक को कृत-कृत्य कराए।।43।।

ॐ ह्रीं कलापि सुवाहनायै नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नय 'निश्चय व्यवहार' निराले, नूपुर गुंजन करने वाले।
जन जन को आह्लादित करते, सबके मन का कालुष हरते।।44।।

ॐ ह्रीं निश्चयव्यवहारदृङ्नूपुरायै नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'महा मेखला बोध' कहाई, जिसने आतम शोध कराई।
अधोगमन से हमें बचाए, उर्ध्व गमन की ओर बढ़ाए।।45।।

ॐ ह्रीं बोधमेखलायै नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शील हार 'सच्चारित' गाया, पावन यह श्रृंगार बताया।
मोक्ष मुकुट को देने वाला, सारा जग जिसका मतवाला।।46।।

ॐ ह्रीं सम्यक्चारित्रशीलहारायै नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ज्ञान ज्योति से उज्ज्वल माता, 'महोज्ज्वला' दिलवाए साता।
मोह महातम पूर्ण नशाए, समीचीन शिव पथ दिखलाए।।47।।

ॐ ह्रीं महोज्ज्वलायै नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'नैगम नय केयूर' कहाये, बाजूबन्द भी जो कहलाये।
जिसकी महिमा यह जग गाये, अनुपम शोभा श्रेष्ठ बढ़ाये।।48।।

ॐ ह्रीं नैगमामोघकेयूरायै नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'संग्रहनय' माँ की है चोली, माँ तेरी जो है हम जोली।
रत्नत्रय से अनुपम सोहे, भव्य जनों के मन को मोहे।।49।।

ॐ ह्रीं संग्रहानघचोलकायै नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नय 'व्यवहार कटक' कहलाया, तत्त्व भेद जिसने दिखलाया।
भेद ज्ञान जग को करवाए, केवलज्ञानी उसे बनाए।।50।।

ॐ ह्रीं व्यवहारोदघकटकायै नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(नरेन्द्र छन्द)

'ऋजुसूत्र' नय कंकण पावन, जो हाथों में सोहे।
जिसकी प्रभा ऋजू प्राणी के, मन को भारी मोहे।।
वागीश्वरी हे शारद माता!, तुम्हें भाव से ध्याते।
भव्य भारती तव चरणों में, सादर अर्घ्य चढ़ाते।।51।।

ॐ ह्रीं ऋजुसूत्रसुकंकणायै नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शब्दोज्ज्वल से महापाश को, क्षण में हरने वाली।
सुख शांती सौभाग्य जगत में, मंगल करने वाली।।
वागीश्वरी हे शारद माता!, तुम्हें भाव से ध्याते।
भव्य भारती तव चरणों में, सादर अर्घ्य चढ़ाते।।52।।

ॐ ह्रीं शब्दोज्ज्वलमहापाशायै नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'समभिरूढ़' नय अंकुश माँ का, करांगुलि में सोहे।
कर्मों से रक्षा करता जो, सबके मन को मोहे।।
वागीश्वरी हे शारद माता!, तुम्हें भाव से ध्याते।
भव्य भारती तव चरणों में, सादर अर्घ्य चढ़ाते।।53।।

ॐ ह्रीं समभिरूढ़ महांकुशायै नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'एवंभूत' सुनय मुद्रा है, तव कर की शुभकारी।
जिसकी प्रभा से कर्म शत्रु सब, होते हैं भयकारी।।
वागीश्वरी हे शारद माता!, तुम्हें भाव से ध्याते।
भव्य भारती तव चरणों में, सादर अर्घ्य चढ़ाते।।54।।

ॐ ह्रीं एवंभूतसन्मुद्रायै नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'दश धर्मों का अम्बर' माँ की, प्रभा श्रेष्ठ झलकाए।
ज्ञानी जन के मन को ऐसा, अम्बर भारी भाए॥
वागीश्वरी हे शारद माता!, तुम्हें भाव से ध्याते।
भव्य भारती तव चरणों में, सादर अर्घ्य चढ़ाते॥55॥

ॐ ह्रीं दशधर्ममहाम्बरायै नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'जप माला' है कर में माँ के, शिव पद की वरमाला।
शिव पद का राही बन जाता, माँ को जपने वाला॥
वागीश्वरी हे शारद माता!, तुम्हें भाव से ध्याते।
भव्य भारती तव चरणों में, सादर अर्घ्य चढ़ाते॥56॥

ॐ ह्रीं जपमालासद्हस्तायै नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'एक हाथ में पुस्तक' सोहे, जिसमें सार भरा है।
जिसने मन से ध्याया माँ को, जीवन हुआ खरा है॥
वागीश्वरी हे शारद माता!, तुम्हें भाव से ध्याते।
भव्य भारती तव चरणों में, सादर अर्घ्य चढ़ाते॥57॥

ॐ ह्रीं पुस्तकांकितसत्करायै नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'नय प्रमाण' कर्णाभूषण शुभ, शोभा श्रेष्ठ बढ़ाएँ।
तत्त्वों के दिग्दर्शनकारी, सम्यक् ज्ञान जगाएँ॥
वागीश्वरी हे शारद माता!, तुम्हें भाव से ध्याते।
भव्य भारती तव चरणों में, सादर अर्घ्य चढ़ाते॥58॥

ॐ ह्रीं नयप्रमाणताटंकायै नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शुभ प्रत्यक्ष परोक्ष युग्म यह, श्रेष्ठ कर्णिका गाई।
जो 'प्रमाण' को हृदय बसाए, उसने मुक्ती पाई॥
वागीश्वरी हे शारद माता!, तुम्हें भाव से ध्याते।
भव्य भारती तव चरणों में, सादर अर्घ्य चढ़ाते॥59॥

ॐ ह्रीं प्रमाणद्वयकर्णिकायै नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'मुकुट रहा कैवल्य ज्ञान' शुभ, शोभा शिर पे देवे।
जो झुकते हैं पद में माँ के, वह शिव पद पा लेवे॥
वागीश्वरी हे शारद माता!, तुम्हें भाव से ध्याते।
भव्य भारती तव चरणों में, सादर अर्घ्य चढ़ाते॥60॥

ॐ ह्रीं केवलज्ञानमुकुटायै नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'शुक्ल ध्यान' के तिलक से माँ का, माथा शोभा पाए।
शुक्ल ध्यान को पाने वाला, शिव पदवी प्रगटाए।।
वागीश्वरी हे शारद माता!, तुम्हें भाव से ध्याते।
भव्य भारती तव चरणों में, सादर अर्घ्य चढ़ाते।।61।।

ॐ ह्रीं शुक्लध्यान विशेषकायै नम: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'स्यात्कार' शुभ चिन्ह आपका, अक्षर प्राण कहाए।
घोर तिमिर एकान्तवाद का, पास नहीं रह पाए।।
वागीश्वरी हे शारद माता!, तुम्हें भाव से ध्याते।
भव्य भारती तव चरणों में, सादर अर्घ्य चढ़ाते।।62।।

ॐ ह्रीं स्यात्कारप्राणजीवन्त्यै नम: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'उपादेय चित्' संभाषण है, भाषा मंगलकारी।
चित्त को मंगल करने वाली, वाणी है मनहारी।।
वागीश्वरी हे शारद माता!, तुम्हें भाव से ध्याते।
भव्य भारती तव चरणों में, सादर अर्घ्य चढ़ाते।।63।।

ॐ ह्रीं श्री चिदुपादेयभाषिण्यै नम: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'अनेकातात्मक पद्मासन', अनुपम आनन्दकारी।
हंसासनी कहाती माता, जन-जन की मनहारी।।
वागीश्वरी हे शारद माता!, तुम्हें भाव से ध्याते।
भव्य भारती तव चरणों में, सादर अर्घ्य चढ़ाते।।64।।

ॐ ह्रीं अनेकांतात्मकानंदपद्मासन नम: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'सप्त भंग' है श्वेत छत्र शुभ, हे वीणा वरदानी!
सप्त स्वरों से सप्त भंग की, ध्वनि गूंजे कल्याणी।।
वागीश्वरी हे शारद माता!, तुम्हें भाव से ध्याते।
भव्य भारती तव चरणों में, सादर अर्घ्य चढ़ाते।।65।।

ॐ ह्रीं सप्तभंगीसितच्छत्रायै नम: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

है 'सुदीप नय षट्क' श्रेष्ठतम, लोकालोक प्रकाशी।
ध्यान करें जो विशद भाव से, हो शिवपुर का वासी।।
वागीश्वरी हे शारद माता!, तुम्हें भाव से ध्याते।
भव्य भारती तव चरणों में, सादर अर्घ्य चढ़ाते।।66।।

ॐ ह्रीं नयषट्कप्रदीपिकायै नम: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'द्रव्यार्थिक पर्यायार्थिक' नय दो, चँवर ढुरें हे माता!
प्राप्त करें जो सुनय कुशलता, वे पावें सुख साता।।
वागीश्वरी हे शारद माता!, तुम्हें भाव से ध्याते।
भव्य भारती तव चरणों में, सादर अर्घ्य चढ़ाते।।67।।

ॐ ह्रीं द्रव्यार्थिक पर्यायार्थिक नय चामरायै नम: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

है 'कैवल्य कामिनी' माँ की, सखी श्रेष्ठ वरदानी।
केवलज्ञान प्रकट कर प्राणी, पावे शिव रजधानी।।
वागीश्वरी हे शारद माता!, तुम्हें भाव से ध्याते।
भव्य भारती तव चरणों में, सादर अर्घ्य चढ़ाते।।68।।

ॐ ह्रीं कैवल्यकामिन्यै नम: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'ज्योतिर्मय' दृग ज्ञान नेत्र से, आतम ज्योति जलाए।
निज प्रज्ञा से भवि जीवों को, शिव पथ गमन कराए।।
वागीश्वरी हे शारद माता!, तुम्हें भाव से ध्याते।
भव्य भारती तव चरणों में, सादर अर्घ्य चढ़ाते।।69।।

ॐ ह्रीं ज्योतिर्मय्यै नम: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

माँ सम्पूर्ण 'वांग्मय रूपिणि', ज्ञानाभूषण धारी।
अध्यातम की वीणा बजती, दर पर मंगलकारी।।
वागीश्वरी हे शारद माता!, तुम्हें भाव से ध्याते।
भव्य भारती तव चरणों में, सादर अर्घ्य चढ़ाते।।70।।

ॐ ह्रीं वाङ्मयरूपिण्यै नम: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'पूर्वा पर' अविरुद्ध ज्ञान से, तीनों लोक महकता।
हो जाए यदि कृपा मात की, जीवन सूर्य चमकता।।
वागीश्वरी हे शारद माता!, तुम्हें भाव से ध्याते।
भव्य भारती तव चरणों में, सादर अर्घ्य चढ़ाते।।71।।

ॐ ह्रीं पूर्वापराविरुद्धायै नम: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गजगामिनि 'तू जगत व्यापिनी, गीर्वाण' श्री गौ माता।
कृपा करे माँ हर प्राणी पर, हरती पूर्ण असाता।।
वागीश्वरी हे शारद माता!, तुम्हें भाव से ध्याते।
भव्य भारती तव चरणों में, सादर अर्घ्य चढ़ाते।।72।।

ॐ ह्रीं गवे नम: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

बीज रहा 'श्रुत' विशद ज्ञान का, तुमसे ही सब पाते।
सुर नर मुनि गणधर आदिक सब, तव पद शीश झुकाते।।
वागीश्वरी हे शारद माता!, तुम्हें भाव से ध्याते।
भव्य भारती तव चरणों में, सादर अर्घ्य चढ़ाते।।73।।

ॐ ह्रीं श्रुत्यै नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

है 'अधिदेव देव' की माता, तू श्रुतदेव कहाए।
जपे नाम की माला तेरे, विद्यापति बन जाए।।
वागीश्वरी हे शारद माता!, तुम्हें भाव से ध्याते।
भव्य भारती तव चरणों में, सादर अर्घ्य चढ़ाते।।74।।

ॐ ह्रीं देवाधिदेवतायै नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे 'त्रिलोक मंगलकरणी' माँ, सर्व अमंगलहारी।
सर्व अर्थ की सिद्धी करने, वाली अतिशयकारी।।
वागीश्वरी हे शारद माता!, तुम्हें भाव से ध्याते।
भव्य भारती तव चरणों में, सादर अर्घ्य चढ़ाते।।75।।

ॐ ह्रीं त्रिलोकमंगलायै नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(शम्भू छन्द)

कही 'शरण भव' मात जहाँ में, सब जीवों की कल्याणी।
भक्त वत्सला हे माता! तू, भवि जीवों की वरदानी।।
सरस्वती हे मात भारती! सार्थक हैं तेरे कई नाम।
कृपा प्राप्त करने तव पद में, प्राणी करते सतत् प्रणाम।।76।।

ॐ ह्रीं भवशरण्यायै नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'सर्व वन्दिता' हे कल्याणी!, जन जन की तू उपकारी।
आगम का शुभ सार बताने, वाली है मंगलकारी।।
सरस्वती हे मात भारती!, सार्थक हैं तेरे कई नाम।
कृपा प्राप्त करने तव पद में, प्राणी करते सतत् प्रणाम।।77।।

ॐ ह्रीं सर्ववंदितायै नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'बोध मूर्ति' हे मात शारदे!, जग को बोध कराया है।
शरण आपकी जिसने पाई, उसने शिव पद पाया है।
सरस्वती हे मात भारती!, सार्थक हैं तेरे कई नाम।
कृपा प्राप्त करने तव पद में, प्राणी करते सतत् प्रणाम।।78।।

ॐ ह्रीं बोधमूर्तये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'शब्द मूर्ति' वागीश्वरी माता, तुममें काव्य समाए हैं।
गद्य पद्य शुभ छन्द और रस, तुमसे सबने पाए हैं॥
सरस्वती हे मात भारती!, सार्थक हैं तेरे कई नाम।
कृपा प्राप्त करने तव पद में, प्राणी करते सतत् प्रणाम॥79॥

ॐ ह्रीं शब्दमूर्तये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'चिदानन्द' रूपी हे माता, तूने जग कल्याण किया।
महानिधि माहेश्वरी, मैय्या, जीवन का वरदान दिया॥
सरस्वती हे मात भारती!, सार्थक हैं तेरे कई नाम।
कृपा प्राप्त करने तव पद में, प्राणी करते सतत् प्रणाम॥80॥

ॐ ह्रीं चिदानंदैक रूपिण्यै नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हर प्राणी के हृदय गूँजने, वाली माँ 'जिनवाणी' है।
भव सिन्धू से तारक अनुपम, जग जन की कल्याणी है॥
सरस्वती हे मात भारती!, सार्थक हैं तेरे कई नाम।
कृपा प्राप्त करने तव पद में, प्राणी करते सतत् प्रणाम॥81॥

ॐ ह्रीं जिनवाण्यै नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वर देने वाली माँ 'वरदा', सम्यक् ज्ञान प्रदायक है।
शिवपुर राह दिखाने वाली, माँ कर्मों की क्षायक है॥
सरस्वती हे मात भारती!, सार्थक हैं तेरे कई नाम।
कृपा प्राप्त करने तव पद में, प्राणी करते सतत् प्रणाम॥82॥

ॐ ह्रीं वरदायै नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'नित्य' कभी जो क्षय ना होती, नित्या अनुपम आप कही।
जग जीवों को सदा आपने, राह दिखाई श्रेष्ठ सही॥
सरस्वती हे मात भारती!, सार्थक हैं तेरे कई नाम।
कृपा प्राप्त करने तव पद में, प्राणी करते सतत् प्रणाम॥83॥

ॐ ह्रीं नित्यायै नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'भुक्ति मुक्ति' फल दायक माता, तुमने जीवन दान दिया।
ज्ञान दान चिन्तामणि देकर, इस जग का उपकार किया॥
सरस्वती हे मात भारती!, सार्थक हैं तेरे कई नाम।
कृपा प्राप्त करने तव पद में, प्राणी करते सतत् प्रणाम॥84॥

ॐ ह्रीं भुक्तिमुक्ति फलप्रदायै नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'वागीश्वरी' हे मात! आपसे, मंत्रवाक् की सिद्धी है।
यंत्र मंत्र सबकी दाता तू, तुमसे जगत प्रसिद्धी है।।
सरस्वती हे मात भारती!, सार्थक हैं तेरे कई नाम।
कृपा प्राप्त करने तव पद में, प्राणी करते सतत् प्रणाम।।85।।

ॐ ह्रीं वागीश्वर्यै नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तुम्हें 'विश्वरूपा' कहते सब, सारे रूप समाए हैं।
जो भी रूप कहे हैं जग में, सबने तुमसे पाए हैं।।
सरस्वती हे मात भारती!, सार्थक हैं तेरे कई नाम।
कृपा प्राप्त करने तव पद में, प्राणी करते सतत् प्रणाम।।86।।

ॐ ह्रीं विश्वरूपायै नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'शब्द ब्रह्म स्वरूपी' माता, तुमसे यह संसार चले।
मात कृपा से जग जीवों के, उर में ज्ञान का दीप जले।।
सरस्वती हे मात भारती!, सार्थक हैं तेरे कई नाम।
कृपा प्राप्त करने तव पद में, प्राणी करते सतत् प्रणाम।।87।।

ॐ ह्रीं शब्दब्रह्मस्वरूपिण्यै नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'शुभंकरी' हे मात आपने, जग को शुभ सन्देश दिया।
जिसको पाकर जग जीवों ने, मंगलमय शुभ कार्य किया।
सरस्वती हे मात भारती!, सार्थक हैं तेरे कई नाम।
कृपा प्राप्त करने तव पद में, प्राणी करते सतत् प्रणाम।।88।।

ॐ ह्रीं शुभंकर्यै नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जग का हित करने वाली माँ, 'हितंकरी' कहलाती है।
जन जन का हित हो हरदम ही, यही भावना भाती है।।
सरस्वती हे मात भारती!, सार्थक हैं तेरे कई नाम।
कृपा प्राप्त करने तव पद में, प्राणी करते सतत् प्रणाम।।89।।

ॐ ह्रीं हितंकर्यै नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'श्री करी' माँ उभय लक्ष्मी, जग को सतत् प्रदान करे।
धर्म अर्थ अरु काम मोक्ष दे, सारे जग का कष्ट हरे।।
सरस्वती हे मात भारती!, सार्थक हैं तेरे कई नाम।
कृपा प्राप्त करने तव पद में, प्राणी करते सतत् प्रणाम।।90।।

ॐ ह्रीं श्रीकर्यै नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(रोला छन्द)

'अम्ब शंकरी' विषम भाव सब हरने वाली,
प्रशमादिक शुभ भाव श्रेष्ठ शुभ करने वाली।
दो वरदान ज्ञान का हमको मंगलकारी,
अर्घ्य चढ़ाकर पूजा करते हम मनहारी।।91।।

ॐ ह्रीं शंकर्यै नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'सत्या' माँ सत्यार्थ प्रकाशी जग कल्याणी,
ज्ञान सुधारस से जीवों को भरने वाली।
दो वरदान ज्ञान का हमको मंगलकारी,
अर्घ्य चढ़ाकर पूजा करते हम मनहारी।।92।।

ॐ ह्रीं सत्यै नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'क्षयंकरी' है मात पाप क्षय करने वाली,
ज्ञान सुधारस से जीवों को भरने वाली।
दो वरदान ज्ञान का हमको मंगलकारी,
अर्घ्य चढ़ाकर पूजा करते हम मनहारी।।93।।

ॐ ह्रीं सर्वपापक्षयंकर्यै नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'शिवंकरी' जीवों को शिव का मार्ग दिखाए,
जिन शासन का कर प्रकाश शिवपुर पहुँचाए।
दो वरदान ज्ञान का हमको मंगलकारी,
अर्घ्य चढ़ाकर पूजा करते हम मनहारी।।94।।

ॐ ह्रीं शिवंकर्यै नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'महेश्वरी' जीवों को शुभ ऐश्वर्य दिलाए,
इन्द्र नरेन्द्र सुरेन्द्र आदि पद प्राणी पाए।
दो वरदान ज्ञान का हमको मंगलकारी,
अर्घ्य चढ़ाकर पूजा करते हम मनहारी।।95।।

ॐ ह्रीं महेश्वर्यै नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'विद्या देवी' जग जीवों को विद्यादायी,
श्रुत अमृत का पान कराए जो वरदायी।

दो वरदान ज्ञान का हमको मंगलकारी,
अर्घ्य चढ़ाकर पूजा करते हम मनहारी।।96।।

ॐ ह्रीं विद्यायै नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'दिव्य ध्वनि' पा दिव्य रूप पाते हैं प्राणी,
दिव्य देशना है सारे जग की कल्याणी।।
दो वरदान ज्ञान का हमको मंगलकारी,
अर्घ्य चढ़ाकर पूजा करते हम मनहारी।।97।।

ॐ ह्रीं दिव्यध्वन्यै नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मरते को भी करे अमर 'माता' जिनवाणी,
ज्ञानामृत पाकर हम भी बन् जाएँ ज्ञानी।
दो वरदान ज्ञान का हमको मंगलकारी,
अर्घ्य चढ़ाकर पूजा करते हम मनहारी।।98।।

ॐ ह्रीं मात्रै नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

है 'विद्वद' आह्लाद दायिनी जग हितकारी,
विद्वानों को ज्ञान प्रदान करे शुभकारी।
दो वरदान ज्ञान का हमको मंगलकारी,
अर्घ्य चढ़ाकर पूजा करते हम मनहारी।।99।।

ॐ ह्रीं विद्वदाल्हाददायिन्यै नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्व 'कला' दे भला किया तूने हे माता!,
कृपा प्राप्त कर मिटती जग की पूर्ण असाता।
दो वरदान ज्ञान का हमको मंगलकारी,
अर्घ्य चढ़ाकर पूजा करते हम मनहारी।।100।।

ॐ ह्रीं कलायै नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'भगवत्' के मुख से प्रगटित भगवती कहाए,
मद माया को जीते जो भगवान बनाए।
दो वरदान ज्ञान का हमको मंगलकारी,
अर्घ्य चढ़ाकर पूजा करते हम मनहारी।।101।।

ॐ ह्रीं भगवत्यै नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

केवल रवि से 'दीप्त रूप' आलोकित होवे,
फैला जो अज्ञान महातम सारा खोवे।
दो वरदान ज्ञान का हमको मंगलकारी,
अर्घ्य चढ़ाकर पूजा करते हम मनहारी।।102।।

ॐ ह्रीं दीप्तायै नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'शोक प्रणासन' हारी माँ जिनवाणी गाई,
वह अशोक हो जाते जिनने शरणा पाई।।
दो वरदान ज्ञान का हमको मंगलकारी,
अर्घ्य चढ़ाकर पूजा करते हम मनहारी।।103।।

ॐ ह्रीं सर्वशोक प्रणाशिन्यै नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मात 'महर्षि धारिणि' कहते तुमको प्राणी,
ऋषि मुनि भी धारण करते उर में जिनवाणी।
दो वरदान ज्ञान का हमको मंगलकारी,
अर्घ्य चढ़ाकर पूजा करते हम मनहारी।।104।।

ॐ ह्रीं महर्षिधारिण्यै नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तीर्थंकर के मुख से खिरने वाली 'पूता',
द्वादशांग की श्रेष्ठ रही जिनमात प्रसूता।
दो वरदान ज्ञान का हमको मंगलकारी,
अर्घ्य चढ़ाकर पूजा करते हम मनहारी।।105।।

ॐ ह्रीं पूतायै नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'गणाधीश अवतारित' है माँ हंस गामिनी,
इच्छित फल देने वाली हे मात कामिनी!
दो वरदान ज्ञान का हमको मंगलकारी,
अर्घ्य चढ़ाकर पूजा करते हम मनहारी।।106।।

ॐ ह्रीं गणाधीशावतारितायै नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'ब्रह्म लोक' में स्थिर है आवास तुम्हारा,
जग जीवों को मात आपका रहा सहारा।
दो वरदान ज्ञान का हमको मंगलकारी,
अर्घ्य चढ़ाकर पूजा करते हम मनहारी।।107।।

ॐ ह्रीं ब्रह्मलोक स्थिरावासायै नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'द्वादश आम्नाय' की देवी तू है शिवकारी,
मम् जीवन मंगल कर दो हे मंगलकारी!
दो वरदान ज्ञान का हमको मंगलकारी,
अर्घ्य चढ़ाकर पूजा करते हम मनहारी।।108।।

ॐ ह्रीं द्वादशाम्नाय देव्यै नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्णार्घ्य

(शम्भू छन्द)

अष्टोत्तर शत् नाम के द्वारा, माँ को नित प्रति ध्याते हैं।
शास्त्र विशारद वे कवि वक्ता, प्रवचन पटुता पाते हैं।।
उत्तम यश वैभव सम्पत्ती, शुभ सौभाग्य जगाते हैं।
ब्रह्म सूरि मुनि कहते वे मुनि, श्रुत केवलि बन जाते हैं।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकर मुखकमल विनिर्गत द्वादशांगमयी सरस्वती देव्यै पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जाप्य मंत्र

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐंम् अर्हं श्री जिन मुखोद्भूत सरस्वती देव्यैः नमः

जयमाला

दोहा- **सप्त तत्त्व छह द्रव्य शुभ, लोकालोक त्रिकाल।**
दर्शायक वाणी विमल, की गाते जयमाल।।

(चाल–टप्पा)

तीर्थंकर की दिव्य देशना, जग में सुखदाई।
लोका-लोक प्रकाशित होता, जिसकी प्रभुताई।।
सभी मिल पूजो हो भाई...
सम्यक् ज्ञान प्रदायक अनुपम जिनवाणी माई।
सभी मिल पूजो हो भाई...।।1।।
सप्त शतक लघु महाभाषाएँ, अष्टादश भाई।
अक्षर और अनक्षर अनुपम, दोय रूप पाई।।
सभी मिल पूजो हो भाई...।।2।।
ॐकारमय खिरे देशना, तीन काल भाई।
गणधर झेला करते जिसको, हिरदय हर्षाई।।
सभी मिल पूजो हो भाई...।।3।।
सप्त तत्त्व छह द्रव्य प्रकाशक, अतिशय सुख दाई।
द्वादशांग में वर्णित पावन, शुभ मंगल दाई।।
सभी मिल पूजो हो भाई...।।4।।
अंग बाह्य अरु अंग प्रविष्टी, भेद रूप गाई।

अनेकान्त अरु स्याद्वाद की, महिमा दिखलाई।।
सभी मिल पूजो हो भाई...।।5।।
आचारांग में पद अष्टादश, सहस्त्र रहे भाई।
छत्तिस सहस पद सूत्र कृतांग में, जानो सुखदाई।।
सभी मिल पूजो हो भाई...।।6।।
स्थानांग में सहस्त्र छियालिस, पद संख्या गाई।
समवायांग में लाख सु चौंसठ, पद जानो भाई।।
सभी मिल पूजो हो भाई...।।7।।
दोय लाख अट्ठाइस सहस्त्र, व्याख्या प्रज्ञप्ति गाई।
पाँच लाख छप्पन हजार का, ज्ञातृकथांग भाई।।
सभी मिल पूजो हो भाई...।।8।।
ग्यारह लाख सत्तर हजार का, उपासकांग भाई।
तेईस लाख अट्ठाइस सहस्त्र का, अन्तः कृत भाई।।
सभी मिल पूजो हो भाई...।।9।।
लक्ष बानवे सहस्त्र चवालिस, अनुत्तरांग भाई।
सोलह सहस लाख तेरानवे, प्रश्न व्याकरण भाई।।
सभी मिल पूजो हो भाई...।।10।।
एक करोड़ लाख चौरासी, विपाकसूत्र गाई।
चार करोड़ लक्ष पन्द्रह दो, सहस्त्र हुए भाई।।
सभी मिल पूजो हो भाई...।।11।।
दृष्टिवाद के पंच भेद हैं, अतिशय सुखदाई।
द्रव्य भाव श्रुत दोय रूप में, कहा गया भाई।।
सभी मिल पूजो हो भाई...।।12।।
एक सौ बारह कोटि तिरासी, लक्ष अधिक भाई।
सहसाट्ठावन पञ्च सर्व पद, जिनवाणी गाई।।
सभी मिल पूजो हो भाई...।।13।।

दोहा– **भक्ति भाव से भक्त सब, करते यही पुकार।**
माँ जिनवाणी की कृपा, बरसे सदाबहार।।

ॐ ह्रीं श्री जिनमुखोद्भव सरस्वती देव्यै जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा– **माँ जिनवाणी सरस्वती, आदिक हैं कई नाम।**
वन्दन करते भाव से, करके 'विशद' प्रणाम।।

।। इत्याशीर्वादः ।।

समुच्चय जयमाला

दोहा- जिनवाणी माँ सरस्वती, मंगलमयी त्रिकाल।
कृपा करो हे शारदे!, गाते हम जयमाल॥

(तर्ज–जिसने राग द्वेष...)

हंस गामिनी सरस्वती माँ, तूने जग कल्याण किया।
जिनवाणी हे मात भारती!, जिन मुख से अवतार लिया॥
द्वादश अंगों से कल्पित तुम, अनुपम सुन्दर रूप अहा।
तीर्थंकर हैं स्वामी जिसके, समवशरण शुभ महल रहा॥1॥

सम्यक् दर्शन तिलक आपका, रत्नत्रय के वस्त्र सजें।
सप्त भंग के सप्त स्वरों से, द्वार आपके वाद्य बजें॥
अंग पूर्व आभूषण माँ के, स्याद्वाद के शस्त्र लिए।
मुकुट चन्द से शोभित अनुपम, मोर सवारी आप किए॥2॥

हैं अनुयोग हाथ चऊ माँ के, एक हाथ में जप माला।
द्वितीय में जिनवाणी सोहे, तृतीय है वीणा वाला॥
चौथे कर में रहा कमण्डल, शुचि का जो साधन गाया।
प्रज्ञा अभय प्रदायक हर्षित, मुखमण्डल मन को भाया॥3॥

तीन लोक में सबसे सुन्दर, रूप आपका आभावान।
धर्म सृष्टि का मूल स्रोत, तुमने इस जग को किया प्रदान॥
कल्प वृक्ष सम अनेकांतमय, वाणी माँ की है पावन।
गुणानन्त दर्शाने वाला, वाहन मोर है मनभावन॥4॥

मात भारती को जो ध्याये, हो जाता वह प्रज्ञावान।
जड़ धी शास्त्र विशारद बनता, कहलाए जग में विद्वान॥
विदुशां माता विद्वानों को, शिव का मार्ग दिखाती है।
गुप्ति समिति व्रत की शिक्षा, देकर श्रमण बनाती है॥5॥

एक हिरण ने श्रमण के द्वारा, जिनवाणी का श्रवण किया।
बाली मुनि बनकर के उसने, सिद्ध शिला पर गमन किया॥
जिनवाणी में श्रद्धाधारी, जग में संत हुए भारी।
श्रवण पठन कर जिनवाणी का, बने श्रेष्ठ जो अनगारी॥6॥

कोण्डेश ग्वाला ने जिन मुनि, को शुभ शास्त्र प्रदान किया।
कुन्द-कुन्द बनकर ग्वाला ने, ग्रन्थ रचे कल्याण किया॥

बलिदानी निकलंक वीर ने, जीवन का बलिदान किया।
श्रुत की रक्षा करने हेतू, भ्रात को जीवनदान दिया।।7।।

श्रीधरसेनाचार्य ने श्रुत के, लेखन को मुनि बुलवाए।
पुष्पदंत अरु भूतबलि जी, गुरु चरणों में श्रुत पाए।।
कलियुग में श्रुत की गंगा का, लेखन कर शुभ कार्य किया।
कुन्द-कुन्द मुनि उमास्वामि जी, ने लेखन में भाग लिया।।8।।

समंतभद्र मुनि पूज्यपाद जी, नेमिचंद जिनसेन महान।
वीरसेन रविषेण कुमुदचंद, मानतुंग जी हुए प्रधान।।
इत्यादिक जैनाचार्यों ने, श्रुत की रचना कर मनहार।
ताड़ पत्र पर जैनागम के, सूत्र लिखे है मंगलकार।।9।।

शांति सागराचार्य आदि मुनि, महावीर कीर्ति हुए महान।
जिनके द्वारा श्रुत सूत्रों का, किया गया मुश्किल व्याख्यान।।
विमल विराग भरत सागर जी, हुए कई जिन माँ के लाल।
विशद सिंधु बनकर के हमने, गाई माँ की लघु जयमाल।।10।।

सम्यक् श्रद्धा धारण कर जो, सृजन शास्त्र का करें विशेष।
उभय लक्ष्मी पाने वाले, परम सौख्य पाते अवशेष।।
श्रुत की रचना में जो मानव, करते सम्यक् द्रव्य प्रदान।
''विशद'' शास्त्र के रचनाकारी, पा लेते हैं पद निर्वाण।।11।।

दोहा– हे माँ अपने लाल को, प्रज्ञा करो प्रदान।
अर्चा की तव नाम की, पाने पद निर्वाण।।

ॐ ह्रीं श्री जिनमुखोद्भव सरस्वत्यै नमः जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा– हे जिनवाणी भारती, भक्त खड़े हैं द्वार।
सम्यक् ज्ञान जगाइये, वन्दन बारम्बार।।

(इत्याशीर्वादः दिव्य पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

सरस्वती माता की आरती

(तर्ज–हो बाबा हम सब उतारें तेरी आरती)

आज करें हम सरस्वती की, आरति मंगलकारी।
दीप जलाकर घृत के लाए, हे माँ तेरे द्वार।।टेक।।

हो माता हम सब उतारें तेरी आरती...
तीर्थंकर की दिव्य देशना, ॐकारमय प्यारी।
सुख शांती सौभाग्य प्रदायक, जन-जन की मनहारी।।1।।
हो माता हम सब उतारें तेरी आरती..
मिथ्या मोह नशाने वाली, है जिनवाणी माता।
ध्याने वाले जग जीवों को, देने वाली साता।।2।।
हो माता हम सब उतारें तेरी आरती...
गणधर द्वारा झेली जाती, तीर्थंकर की वाणी।
मोक्ष मार्ग दिखलाने वाली, सर्व जगत कल्याणी।।3।।
हो माता हम सब उतारें तेरी आरती...
जो जिनवाणी माँ को ध्याते, वे सुख शांती पाते।
पूजा अर्चा करने वाले, केवलज्ञान जगाते।।4।।
हो माता हम सब उतारें तेरी आरती...
महिमा सुनकर के हे माता!, द्वार आपके आये।
'विशद' भाव से आरती करके, सादर शीश झुकाए।।5।।
हो माता हम सब उतारें तेरी आरती...
सुख शांती सौभाग्य बढ़ाकर, मुक्ती राह दिखाओ।
देकर के आशीष हे माता, शिवपुर में पहुँचाओ।।6।।
हो माता हम सब उतारें तेरी आरती...

सरस्वती चालीसा

दोहा- **अर्हत सिद्धाचार्य गुरु, उपाध्याय जिन संत।**
चैत्य चैत्यालय धर्म जिन, जिन श्रुत कहा अनन्त।।
दिव्य ध्वनि जिनदेव की, सरस्वती है नाम।
चालीसा लिखते यहाँ, करके विशद प्रणाम।।

(चौपाई)

जय-जय सरस्वती जिन वाणी, तुम हो जन जन की कल्याणी।
अनुपम भारती नाम कहाया, द्वितिय सरस्वती शुभ गाया।।
तृतिय नाम शारदा जानो, चौथा हंस गामिनी मानों।
पञ्चम विदुषां माता गाई, वागीश्वरि छठवाँ शुभ पाई।।
सप्तम नाम कुमारी गाया, अष्टम ब्रह्मचारिणी पाया।
जगत माता नौमा शुभ जानो, दशम नाम ब्राह्मिणी पहिचानो।।

ब्रह्माणी ग्यारहवा भाई, बारहवा वरदा सुखदायी।
नाम तेरहवां वाणी गाया, चौदहवाँ भाषा कहलाया।।
पन्द्रहवाँ श्रुत देवी जानो, सोलहवाँ गौरी शुभ मानो।
सोलह नाम युक्त जिन माता, सबके मन की हरे असाता।।
द्वादशांग युत वाणी गाई, चौदह पूर्व युक्त बतलाई।
आचारांग प्रथम कहलाया, दूजा सूत्र कृतांग बताया।।
स्थानांग तीसरा जानो, चौथा समवायांग बखानो।
व्याख्या प्रज्ञप्ति है पंचम, श्रोतृकथा शुभ अंग है षष्टम।।
उपासकाध्ययन अंग सातवाँ, अन्तःकृद्दश रहा आठवाँ।
नवम अनुत्तर दशांग बताया, दशम प्रश्न व्याकरण कहाया।।
सूत्र विपांग ग्यारहवा जानो, दृष्टिवाद बारहवा मानो।
पाँच भेद इसके बतलाए, पहला शुभ परिकर्म कहाए।।
सूत्र दूसरा भेद बखाना, भेद पूर्वगत तृतिय माना।
चौथा प्रथमानुयोग कहाया, पंचम भेद चूलिका गाया।।
भेद पूर्वगत के शुभकारी, चौदह होते मंगलकारी।
पहला उत्पाद पूर्व बखाना, पूर्व अग्राणीय द्वितिय मानो।।
तीजा वीर्य प्रवाद कहाया, अस्तिनास्ति प्रवाद फिर गाया।
पञ्चम ज्ञान प्रवाद बखाना, सत्य प्रवाद छट्टा शुभ माना।।
सप्तम आत्म प्रवाद है भाई, कर्म प्रवाद अष्टम सुखदायी।
नौवा प्रत्याख्यान बताया, विद्यानुप्रवाद दशम कहलाया।।
कल्याणवाद ग्यारहवा जानो, प्राणावाय बारहवा मानो।
क्रिया विशाल तेरहवा भाई, लोक बिन्दु सार अन्तिम सुखदायी।।
ऋषभादिक चौबिस जिन गाये, वीर प्रभु अन्तिम कहलाए।
ॐकारमय श्री जिनवाणी, तीन लोक में है कल्याणी।।
गौतम गणधर ने उच्चारी, भवि जीवों को मंगलकारी।
तीन हुए अनुबद्ध केवली, पाँच हुए फिर श्रुत केवली।।
फिर आचार्यों ने वह पाई, परम्परा यह चलती आई।
कलीकाल पञ्चम युग आया, अंग पूर्व का ज्ञान भुलाया।।
ज्ञाता अंगांश के शुभ भाई, धरसेन स्वामी बने सहाई।
भूतबली पुष्पदन्त बुलाए, षट्खण्डागम ग्रन्थ लिखाए।।
धवलादिक टीका शुभकारी, श्रुत का साधन बना हमारी।
शुभ अनुयोग चार बतलाए, चतुर्गति से मुक्ति दिलाए।।
प्रथमानुयोग प्रथम कहलाया, द्वितिय करुणानुयोग बताया।
चरणानुयोग तीसरा जानो, द्रव्यानुयोग चौथा पहिचानो।।

अनेकांतमय अमृतवाणी, स्याद्वादमय श्री जिनवाणी।
जिसमें हम अवगाहन पाएँ, अपना जीवन सफल बनाएँ॥
सम्यक् श्रुत पा ध्यान लगाएँ, अपना केवल ज्ञान जगाएँ।
विशद भावना है यह मेरी, मिट जाए भव भव की फेरी॥

दोहा– **श्रद्धा भक्ति से पढ़े, चालीसा शुभकार।**
लौकिक आध्यात्मिक सभी, पावे ज्ञानानुसार॥
पच्चीस सौ अड़तीस यह, कहा वीर निर्वाण।
"विशद" भाव से यह किया, आगम का गुणगान॥

जाप्य मंत्र–ॐ ह्रीं श्रां श्रूं श्रः हं सं थः थः थः ठः ठः ठः सरस्वती भगवती विद्या प्रसादं कुरू कुरू स्वाहा।

परम पूज्य 108 आचार्य श्री विशदसागरजी महाराज की पूजन

पुण्य उदय से हे! गुरुवर, दर्शन तेरे मिल पाते हैं।
श्री गुरुवर के दर्शन करके, हृदय कमल खिल जाते हैं॥
गुरु आराध्य हम आराधक, करते उर से अभिवादन।
मम् हृदय कमल से आ तिष्ठो, गुरु करते हैं हम आह्वानन्॥

ॐ हूँ 108 आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्र! अत्र अवतर अवतर संवौषट् इति आह्वानन् अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। अत्र मम् सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

सांसारिक भोगों में फँसकर, ये जीवन वृथा गंवाया है।
रागद्वेष की वैतरणी से, अब तक पार न पाया है॥
विशद सिंधु के श्री चरणों में, निर्मल जल हम लाए हैं।
भव तापों का नाश करो, भव बंध काटने आये हैं॥

ॐ हूँ 108 आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्राय जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

क्रोध रूप अग्नि से अब तक, कष्ट बहुत ही पाये हैं।
कष्टों से छुटकारा पाने, गुरु चरणों में आये हैं॥
विशद सिंधु के श्री चरणों में, चंदन घिसकर लाये हैं।
संसार ताप का नाश करो, भव बंध नशाने आये हैं॥

ॐ हूँ 108 आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्राय संसार ताप विध्वंशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

चारों गतियों में अनादि से, बार-बार भटकाये हैं।
अक्षय निधि को भूल रहे थे, उसको पाने आये हैं।।
विशद सिंधु के श्री चरणों में, अक्षय अक्षत लाये हैं।
अक्षय पद हो प्राप्त हमें, हम गुरु चरणों में आये हैं।।

ॐ हूँ 108 आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्राय अक्षय पद प्राप्ताय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

काम बाण की महावेदना, सबको बहुत सताती है।
तृष्णा जितनी शांत करें वह, उतनी बढ़ती जाती है।।
विशद सिंधु के श्री चरणों में, पुष्प सुगंधित लाये हैं।
काम बाण विध्वंश होय गुरु, पुष्प चढ़ाने आये हैं।।

ॐ हूँ 108 आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्राय अक्षय पद प्राप्ताय अक्षात् निर्वपामीति स्वाहा।

काम बाण की महावेदना, सबको बहुत सताती है।
तृष्णा जितनी शांत करें वह, उतनी बढ़ती जाती है।।
विशद सिंधु के श्री चरणों में, पुष्प सुगंधित लाये हैं।
काम बाण विध्वंश होय गुरु, पुष्प चढ़ाने आये हैं।।

ॐ हूँ 108 आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्राय कामबाण पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

काल अनादि से हे गुरुवर! क्षुधा से बहुत सताये हैं।
खाये बहु मिष्ठान जरा भी, तृप्त नहीं हो पाये हैं।।
विशद सिंधु के श्री चरणों में, नैवेद्य सुसुन्दर लाये हैं।
क्षुधा शांत कर दो गुरु भव की! क्षुधा मैटने आये हैं।।

ॐ हूँ 108 आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्राय क्षुधा रोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मोह तिमिर में फंसकर हमने, निज स्वरूप न पहिचाना।
विषय कषायों में रत रहकर, अंत रहा बस पछताना।।
विशद सिंधु के श्री चरणों में, दीप जलाकर लाये हैं।
मोह अंध का नाश करो, मम् दीप जलाने आये हैं।।

ॐ हूँ 108 आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्राय मोहान्धकार विध्वंशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

अशुभ कर्म ने घेरा हमको, अब तक ऐसा माना था।
पाप कर्म तज पुण्य कर्म को, चाह रहा अपनाना था।।
विशद सिंधु के श्री चरणों में, धूप जलाने लाये हैं।
आठों कर्म नशाने हेतू, गुरु चरणों में आये हैं।।

ॐ हूँ 108 आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्राय अष्टकर्म दहनाय धूपं नि. स्वाहा।

पिस्ता अरु बादाम सुपाड़ी, इत्यादिक फल लाये हैं।
पूजन का फल प्राप्त हमें हो, तुमसा बनने आये हैं।।
विशद सिंधु के श्री चरणों में, भाँति-भाँति फल लाये हैं।
मुक्ति वधु की इच्छा करके, गुरु चरणों में आये हैं।।

ॐ हूँ 108 आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्राय मोक्ष फल प्राप्ताय फलम् निर्वपामीति स्वाहा।

प्रासुक अष्ट द्रव्य हे गुरुवर! थाल सजाकर लाये हैं।
महाव्रतों को धारण कर लें, मन में भाव बनाये हैं।।
विशद सिंधु के श्री चरणों में, अर्घ समर्पित करते हैं।
पद अनर्घ हो प्राप्त हमें गुरु, चरणों में सिर धरते हैं।।

ॐ हूँ 108 आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्राय अनर्घ पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा– **विशद सिंधु गुरुवर मेरे, वंदन करूँ त्रिकाल।**
मन-वच-तन से गुरु की, करते हैं जयमाल।।

गुरुवर के गुण गाने को, अर्पित है जीवन के क्षण-क्षण।
श्रद्धा सुमन समर्पित हैं, हर्षायें धरती के कण-कण।।
छतरपुर के कुपी नगर में, गूँज उठी शहनाई थी।
श्री नाथूराम के घर में अनुपम, बजने लगी बधाई थी।।
बचपन में चंचल बालक के, शुभादर्श यूँ उमड़ पड़े।
ब्रह्मचर्य व्रत पाने हेतु, अपने घर से निकल पड़े।।
आठ फरवरी सन् छियानवे को, गुरुवर से संयम पाया।
मोक्ष ज्ञान अन्तर में जागा, मन मयूर अति हर्षाया।।
पद आचार्य प्रतिष्ठा का शुभ, दो हजार सन् पाँच रहा।
तेरह फरवरी बसंत पंचमी, बने गुरु आचार्य अहा।।

तुम हो कुंद-कुंद-कुंद के कुन्दन, सारा जग कुन्दन करते।
निकल पड़े बस इसलिए, भवि जीवों की जड़ता हरते॥
मंद मधुर मुस्कान तुम्हारे, चेहरे पर बिखरी रहती।
तव वाणी अनुपम न्यारी है, करुणा की शुभ धारा बहती है॥
तुममें कोई मोहक मंत्र भरा, या कोई जादू टोना है।
है वेश दिगम्बर मनमोहक अरु, अतिशय रूप सलौना है॥
हैं शब्द नहीं गुण गाने को, गाना भी मेरा अन्जाना।
हम पूजन स्तुति क्या जाने, बस गुरु भक्ति में रम जाना॥
गुरु तुम्हें छोड़ न जाएँ कहीं, मन में ये फिर-फिरकर आता।
हम रहें चरण की शरण यहीं, मिल जाये इस जग की साता॥
सुख साता को पाकर समता से, सारी ममता का त्याग करें।
श्री देव-शास्त्र-गुरु के चरणों में, मन-वच-तन अनुराग करें॥
गुरु गुण गाएँ गुण को पाने, औ सर्वदोष का नाश करें।
हम विशद ज्ञान को प्राप्त करें, औ सिद्ध शिला पर वास करें॥

ॐ ह्रीं 108 आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्राय अनर्घ पद प्राप्ताय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा– **गुरु की महिमा अगम है, कौन करे गुणगान।**
मंद बुद्धि के बाल हम, कैसे करें बखान॥

(इत्याशीर्वादः पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

समुच्चय महार्घ्य

अर्हत् सिद्धाचार्य उपाध्याय, सर्व साधु के चरण नमन।
जैनागम जिन चैत्य जिनालय, जैन धर्म को शत् वन्दन॥
सोलह कारण धर्म क्षमादिक, रत्नत्रय चौबिस तीर्थेश।
अतिशय सिद्धक्षेत्र नन्दीश्वर, की अर्चा हम करें विशेष॥

दोहा- अष्ट द्रव्य का अर्घ्य यह, 'विशद' भाव के साथ।
चढ़ा रहे त्रययोग से, झुका चरण में माथ॥

ॐ ह्रीं श्री अरिहंत, सिद्ध, आचार्य, उपाध्याय, सर्वसाधु, सरस्वती देव्यै, सोलहकारण भावना, दशलक्षण धर्म, रत्नत्रय धर्म, त्रिलोक स्थित कृत्रिम-अकृत्रिम चैत्य-चैत्यालय, नन्दीश्वर, पंचमेरु सम्बन्धी चैत्य-चैत्यालय, कैलाश गिरि, सम्मेद शिखर, गिरनार, चम्पापुर, पावापुर आदि निर्वाण क्षेत्र, अतिशय क्षेत्र, तीस चौबीसी, तीन कम नौ करोड़ गणधरादि मुनिश्वरेभ्यो समुच्च महार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(पुष्पक्षेपण करते हुए शांति पाठ बोले)

शांतिपाठ

शांतिनाथ शांति के दाता, भवि जीवों के भाग्य विधाता।
परम शांत मुद्रा जो धारे, जग जीवों के तारण हारे।।
शरण आपकी जो भी आते, वे अपने सौभाग्य जगाते।
शांतिपाठ पूजा कर गाएँ, पुष्पांजलि कर शांति जगाएँ।।
जिन पद शांती धार कराएँ, जीवन में सुख शांति पाएँ-3।
जीवों को सुख शांति प्रदायी, धर्म सुधामृत के वरदायी।।
शांतिनाथ दुख दारिद्र नाशी, सम्यक्दर्शन ज्ञान प्रकाशी।
राजा प्रजा भक्त नर-नारी, भक्ति करें सब मंगलकारी।।
जैन धर्म जिन आगम ध्यायें, परमेष्ठी पद शीश झुकाएँ।
श्री जिन चैत्य जिनालय भाई, विशद बनें सब शांति प्रदायि।।

ॐ शांति-शांति-शांति

(दिव्य पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

विसर्जन पाठ

भूल हुई हो जो कोई, जान के या अन्जान।
बोधि हीन मैं हूँ विशद, क्षमा करो भगवान।।
ज्ञान ध्यान शुभ आचरण, से भी हूँ मैं हीन।
सर्व दोष का नाश हो, शुभाचरण हो लीन।।
पूजा अर्चा में यहाँ, आए जो भी देव।
करूँ विसर्जन भाव से, क्षमा करो जिन देव।।

।।इत्याशीर्वादः पुष्पांजलिं क्षिपेत्।।

(ठोने में पुष्पक्षेपण करें)

आशिका लेने का मंत्र

पूजा कर आराध्य की, धरे आशिका शीश।
विशद कामना पूर्ण हो, पाएँ जिन आशीष।।

प्रशस्ति

भरत क्षेत्र के मध्य है, भारत देश महान।
मध्य प्रदेश का देश में, रहा अलग स्थान॥
जिला छतरपुर में रहा, कुपी लघु सा ग्राम।
लाल भरोसे सेठ का, रहा श्रेष्ठ शुभ नाम॥
उनके अन्तिम पुत्र थे, नाम था नाथूराम।
जिला छतरपुर में गये, वहाँ बनाया धाम॥1॥

जिनके द्वितीय पुत्र थे, जिनका नाम रमेश।
दीक्षा ले जिनने धरा, श्रेष्ठ दिगम्बर भेष॥
विमल सिन्धु गुरुवर हुए, इस जग में विख्यात।
विराग सिन्धु जग में हुए, जैन धर्म में ख्यात॥2॥

दीक्षा गुरु कहलाए वह, किया बड़ा उपकार।
भरत सिन्धु जी ने दिया, जिनको पद आचार्य॥
काव्य कला है श्रेष्ठ शुभ, विशद सिन्धु की खास।
लेखन चिंतन मनन में, जो रखते विश्वास॥3॥

दिल्ली शास्त्री नगर में, शांतिनाथ भगवान।
के चरणों में सरस्वती, मण्डल लिखा विधान।
पच्चिस सौ अड़तीस शुभ, रहा वीर निर्वाण।
अश्विन कृष्ण नौमी तिथि, मंगलवार महान॥4॥

जिनने अपनी कलम से, लिखे हैं कई विधान।
सारे भारत देश में, होता है गुणगान॥
काव्य कथा नाटक तथा, लिखते हैं कई लेख।
शास्त्र और पत्रिकाओं में, जिनका हैं उल्लेख॥5॥

सरस्वती की भक्ति का, जिसमें रहा बखान।
ऐसी अनुपम कृति से, करो सभी गुणगान॥
लघु धी से जो भी लिखा, मानो उसे प्रमाण।
पूजा अर्चा कर 'विशद', पाओ पद निर्वाण॥6॥